पुतली कला
The Art of Puppetry
2

CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING
15-A, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110 075
Phone : 91-11-25309300, Fax : 91-11-25088637
email : dir.ccrt@nic.in
website : www.ccrtindia.gov.in

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

विश्व के विभिन्न भागों में पुतली कला में जो अभिनव प्रयोग हुए हैं वह उसी का परिणाम है कि आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पेशेवर पुतली नाटक दल प्रदर्शन कर रहे हैं। पुतलियों को परिचालन के आधार पर मुख्यत: चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है। ये हैं–धागा पुतली, छाया पुतली, छड़ पुतली तथा दस्ताना पुतली। पुतलियों के ये रूप पारंपरिक हैं। अंगुली और मुट्ठी पुतली तथा जल पुतली इत्यादि भी लोकप्रिय हैं।

आज के आधुनिक समय में सारे विश्व के शिक्षाविदों ने संचार माध्यम रूप में पुतलियों की उपयोगिता के महत्व को अनुभव किया है। भारत में आज अनेक व्यक्ति तथा संस्थाएं शैक्षणिक संकल्पनाओं के संप्रेषण में पुतलियों के इस्तेमाल करने में छात्रों एवं अध्यापकों को सम्मिलित कर रही हैं।

शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को अपने शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रेरित करने में पुतली कला का सफलता के साथ उपयोग किया गया है। अपनी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने संबंधी कार्यक्रम काफी सहायक साबित हुए हैं। साथ ही इन कार्यक्रमों का लक्ष्य छात्रो में शब्द, आकार, रंग और गति के सौंदर्य के प्रति संवेदना जागृत करना भी है। पुतलियों के निर्माण तथा उनके माध्यम से संप्रेषण करने में जो सौंदर्य-आनंद मिलता है वह बच्चों के व्यक्तित्व के चहुंमुखी विकास में सहायक होता है।

भारत में पारंपरिक पुतली नाटकों की कथावस्तु पौराणिक साहित्य, स्थानीय दंत कथाओं और किंवदंतियों से ली जाती रही है तथा बदले में उनमें चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और नाटक आदि की रचनात्मक अनुभूतियों का समावेश होता रहा है। पुतली कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने में एक साथ अनेक लोगों के सृजनात्मक प्रयासों की जरूरत पड़ती है।

भारत में लगभग सभी प्रकार की पुतलियां पाई जाती हैं तथा पारंपरिक मनोरंजन में सदियों से पुतलीकला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पारंपरिक नाटक की भांति ही पुतली नाटक महाकाव्यों और दंत कथाओं पर आधारित होते हैं तथा देश के विभिन्न प्रांतों की पुतलियों की अपनी एक खास पहचान होती है। उनमें चित्रकला और मूर्तिकला की क्षेत्रीय शैली झलकती है।

दस्ताना पुतली

दस्ताना पुतली को भुजा, कर या हथेली पुतली भी कहा जाता है। इन पुतलियों का मस्तक पेपर मेशे (कुट्टी), कपड़े या लकड़ी का बना होता है तथा गर्दन के नीचे से दोनों हाथ बाहर निकलते हैं। शेष शरीर के नाम पर केवल एक लहराता घाघरा होता है। ये पुतलियां वैसे तो निर्जीव गुड़ियों जैसी होती हैं पर निपुण संचालक के हाथों में पहुंचते ही अनेक गतिविधियों को सक्षमता से प्रस्तुत करती हैं। इनके परिचालन की विधि अत्यंत सरल है। हाथों से गतिविधियों पर नियंत्रण रखा जाता है। पहली अंगुली मस्तक में जाती है तथा मध्यमा और अंगूठा पुतली की दोनों भुजाओं में। इस प्रकार अंगूठे और दो अंगुलियों की सहायता से दस्ताना पुतली सजीव हो उठती है।

भारत में दस्ताना पुतली की परम्परा उत्तर प्रदेश, ओड़िशा, पश्चिमी बंगाल और केरल में लोकप्रिय है। उत्तर प्रदेश के दस्ताना पुतली नाटक सामाजिक विषय वस्तु प्रस्तुत करते हैं तो ओड़िशा में राधा-कृष्ण की कहानियों पर ये नाटक आधारित होते हैं। ओड़िशा में संचालक एक हाथ से ढोलक बजाता है और दूसरे हाथ से पुतले का संचालन करता है। संवाद बोलना, पुतली का संचालन और ढोलक की थाप सुन्दर रूप से क्रमानुसार होता है और एक नाटकीय वातावरण की सृष्टि होती है।

A variety of innovations in puppetry in different parts of the world have resulted in professional puppet theatre groups performing on international forums. Puppets can be broadly classified into four categories based on the mode of manipulation. These are marionettes, shadow puppets, rod puppets and glove puppets. Finger and fist puppets, humanettes and water puppets are also some of the popular forms of puppetry today.

In modern times, educationists all over the world have realised the potential of puppetry as a medium for communication. Many institutions and individuals in India are involving students and teachers in the use of puppetry for communicating educational concepts.

Puppetry has been successfully used to motivate emotionally and physically handicapped students to develop their mental and physical faculties. Awareness programmes about the conservation of the natural and cultural environment have also proved to be useful. These programmes aim at sensitising the students to the beauty in word, sound, form, colour and movement. The aesthetic satisfaction derived from making of puppets and communicating through them helps in the all round development of the personality of the child.

Stories adapted from Puranic literature, local myths and legends usually form the content of traditional puppet theatre in India which, in turn, imbibes elements of all creative expressions like painting, sculpture, music, dance, drama, etc. The presentation of puppet programmes involves the creative efforts of many people working together.

Almost all types of puppets are found in India. Puppetry throughout the ages has held an important place in traditional entertainment. Like traditional theatre, themes for puppet theatre are mostly based on epics and legends. Puppets from different parts of the country have their own identity. Regional styles of painting and sculpture are reflected in them.

Glove Puppets

Glove puppets, are also known as sleeve, hand or palm puppets. The head is made of either papier mache, cloth or wood, with two hands emerging from just below the neck. The rest of the figure consists of a long flowing skirt. These puppets are like limp dolls, but in the hands of an able puppeteer, are capable of producing a wide range of movements. The manipulation technique is simple, the movements are controlled by the human hand, the first finger inserted in the head and the middle finger and the thumb are the two arms of the puppet. With the help of these three fingers, the glove puppet comes alive.

The tradition of glove puppets in India is popular in Uttar Pradesh, Odisha, West Bengal and Kerala. In Uttar Pradesh, glove puppet plays usually present social themes, whereas in Odisha such plays are based on stories of Radha and Krishna. In Odisha, the puppeteer plays on the *dholak* with one hand and manipulates the puppet with the other. The delivery of the dialogues, the movement of the puppet and the beat of the *dholak* are well synchronised and create a dramatic atmosphere.

केरल में पारंपरिक पुतली नाटकों को पावाकथकली कहा जाता है। इसका प्रादुर्भाव 18वीं शताब्दी में वहां के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य नाटक कथकली के पुतली-नाटकों पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण हुआ। पावाकथकली में पुतली की लंबाई एक–दो फीट के बीच होती है। मस्तक तथा दोनों हाथ लकड़ी से बना कर एक मोटे कपड़े से जोड़े जाते हैं। फिर एक छोटे से थैले के रूप में सिए जाते हैं। पुतली के चेहरे के अलंकरण में रंग, चमकीले टीन के टुकड़े तथा मोरपंखों का उपयोग किया जाता है। परिचालक उस थैली में अपना हाथ डालकर पुतली के मस्तक और दोनों भुजाओं का संचालन करता है। इस प्रस्तुति के समय चेंडा, चेनगिल, इलाथलम वाद्य-यंत्रों तथा शंख का उपयोग किया जाता है। केरल के ये पुतली-नाटक रामायण तथा महाभारत की कथाओं पर आधारित होते हैं।

धागा पुतली

भारत में धागा पुतलियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन तो है ही साथ ही समृद्ध भी। अनेक जोड़ युक्त अंग तथा धागों द्वारा संचालन इन्हें अत्यंत लचीलापन प्रदान करते हैं। जिस कारण ये पुतलियाँ काफी लचीली होती हैं। राजस्थान, ओड़िशा, कर्नाटक और तमिलनाडु ऐसे प्रांत हैं जहां यह पुतली कला पल्लवित हुई।

राजस्थान की परम्परागत पुतलियों को कठपुतली कहते हैं। काठ के एक टुकड़े से तराश कर बनाई गई ये पुतलियां रंगबिरंगे पहनावे में बड़ी गुड़ियों के समान लगती है। उनकी वेशभूषा और मुकुट मध्य कालीन राजस्थानी शैली में होती है जो आज तक प्रचलित है। अत्यन्त नाटकीय क्षेत्रीय संगीत कठपुतली नृत्य की संगत करता है। इन के अंडाकार मुख, मछलियों जैसी बड़ी-बड़ी आँख, कमानी जैसी भौं और बड़े-बड़े होंठ आदि कुछ विशिष्ट लक्षण हैं। इसके साथ ही ये पुतलियाँ लम्बा पुछल्ला लहँगा पहनती है और इनके पैरों में जोड़ नहीं होते। पुतली संचालक अपनी उंगलियों से बंधे दो या पांच धागों से उनका संचालन करता है।

ओड़िशा की धागा पुतली को कुनढेई कहते हैं। ये हल्की लकड़ी से बनी होती हैं और इनके पैर नहीं होते तथा ये पुछल्ला लहँगा पहने होती हैं। इन पुतलियों में अनेक जोड़ होते हैं। इसी कारण इनका संचालन सरल है। पुतली संचालक साधारणतः एक लकड़ी के तिकोने फ्रेम को पकड़े रहता है जिस पर संचालन करने के लिए धागे बंधे होते हैं। परम्परागत जात्रा नाटक के अभिनेताओं के भांति कुनढेई की वेशभूषा होती है। क्षेत्र की प्रसिद्ध धुनों से ही संगीत लिया जाता है और कभी-कभी ओडिसी नृत्य के संगीत का गहरा प्रभाव दिखता है।

कर्नाटक की धागा पुतली को गोम्बेयेट्टा कहते हैं। गोम्बेयेट्टा का सम्बन्ध कर्नाटक के लोकनृत्य *यक्षगान* से है इसी कारण यह उससे काफी साम्यता रखता है। गोम्बेयेट्टा पुतलियों की आकृतियां अत्यंत सुसज्जित होती हैं और पैर, कंधे, कोहनी, कूल्हे और घुटने में जोड़ होते हैं। इनका संचालन फ्रेम से बंधे हुए पांच से सात धागों से होता है। दो तीन संचालकों के एक साथ संचालन द्वारा पुतली की कुछ जटिल क्रियाओं का प्रदर्शन भी किया जाता है। गोम्बेयेट्टा में *यक्षगान* के प्रसंगों को प्रदर्शित किया जाता है। साथ में बजने वाला संगीत नाटकीय होने के साथ-साथ लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत का सुंदर समन्वित रूप होता है।

छड़ और धागा पुतली की तकनीक तमिलनाडु की 'बोम्मालट्टा' पुतली में एक साथ मिलती है। ये लकड़ी से बनी होती हैं और संचालन करने के धागे एक लोहे के रिंग से बंधे रहते हैं जिसे कि पुतली संचालक मुकुट की तरह अपने सिर पर धारण किए रहते हैं।

कुछ पुतलियों की हथेलियों और हाथों में जोड़ होते हैं जिनका संचालन छड़ों से होता है। *बोम्मालट्टा* पुतली आकार में बड़ी और भारी होती है और भारतीय परम्परागत पुतलियों में सबसे सुस्पष्ट होती है।

In Kerala, the traditional glove puppet play is called Pavakathakali. It came into existence during the 18th century due to the influence of Kathakali, the famous classical dance drama of Kerala, on puppet performances. In Pavakathakali, the height of a puppet varies from one foot to two feet. The head and the arms are carved of wood and joined together with thick cloth, cut and stitched into a small bag. The face of the puppets are decorated with paints, small and thin pieces of gilded tin, the feathers of the peacock, etc. The manipulator puts his hand into the bag and moves the hands and head of the puppet. The musical instruments used during the performance are *Chenda, Chengila, Ilathalam* and *Shankha*. The theme for Glove puppet plays in Kerala is based on the episodes from either the Ramayana or Mahabharata.

String Puppets

India has a rich and ancient tradition of string puppets or marionettes. Marionettes having jointed limbs controlled by strings allow far greater flexibility and are, therefore, the most articulate of the puppets. Rajasthan, Odisha, Karnataka and Tamil Nadu are some of the regions where this form of puppetry has flourished.

The traditional marionettes of Rajasthan are known as Kathputli. Carved from a single piece of wood, these puppets are like large dolls that are colourfully dressed. Their costumes and headgears are designed in the medieval Rajasthani style of dress, which is prevalent even today. The Kathputli is accompanied by a highly dramatised version of the regional music. Oval faces, large eyes, arched eyebrows and large lips are some of the distinct facial features of these string puppets. These puppets wear long trailing skirts and do not have legs. Puppeteers manipulate them with two to five strings which are normally tied to their fingers and not to a prop or a support.

The string puppets of Odisha are known as Kundhei. Made of light wood, the Odisha puppets have no legs but wear long flowing skirts. They have more joints and are, therefore, more versatile, articulate and easy to manipulate. The puppeteers often hold a wooden prop, triangular in shape, to which strings are attached for manipulation. The costumes of Kundhei resemble those worn by actors of the Jatra traditional theatre. The music is drawn from the popular tunes of the region and is sometimes influenced by the music of Odissi dance.

The string puppets of Karnataka are called Gombeyatta. They are styled and designed like the characters of Yakshagana, the traditional theatre form of the region. The Gombeyatta puppet figures are highly stylized and have joints at the legs, shoulders, elbows, hips and knees. These puppets are manipulated by five to seven strings tied to a prop. Some of the more complicated movements of the puppet are manipulated by two to three puppeteers at a time. Episodes enacted in Gombeyatta are usually based on Prasangas of the Yakshagana plays. The music that accompanies is dramatic and beautifully blends folk and classical elements.

Puppets from Tamil Nadu, known as Bommalattam combine the techniques of both rod and string puppets. They are made of wood and the strings for manipulation are tied to an iron ring which the puppeteer wears like a crown on his head.

एक पुतली लगभग साढ़े चार फीट ऊंची होती है तथा उसका वजन दस किलो के आसपास होता है। इस नाट्य विधा के प्रारंभिक कार्य विनायक पूजा, कोमली, अमनाट्टम तथा पुसेकनाट्टम आदि चार भागों में विभक्त रहते हैं।

छड़ पुतली

छड़ पुतली वैसे तो दस्ताना पुतली का अगला चरण है लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है तथा नीचे स्थित छड़ों पर आधारित रहती है और उसी से संचालित होती है। पुतलीकला का यह रूप आज पश्चिमी बंगाल तथा ओड़िशा में पाया जाता है। पश्चिमी बंगाल के नादिया जिले में आदमकद पुतलियां होती थी जैसी कि जापान की बनराकू। लेकिन पुतलियों का यह रूप अब विलुप्त हो गया है। पश्चिमी बंगाल की शेष प्रचलित पुतलियां तीन-चार फुट लंबी होती हैं तथा वहां के लोक-नाटक जात्रा के पात्रों की भांति उनके भी परिधान होते हैं। प्राय: इनमें तीन जोड़े होते हैं। मुख्य छड़ पर आधारित मस्तक गर्दन से जुड़ा होता है तथा दो छड़ों से जुड़े हाथ कंधे से मिले होते हैं। इनके संचालन की विधि रोचक होने के साथ-साथ अत्यंत रंगमंचीय होती है। संचालक की कमर से बांस की टोपी बंधी रहती है तथा उस पर पुतलियों से जुड़ी छड़ें आधारित होती हैं। प्रत्येक पुतली का संचालक आदमकद पर्दे के पीछे खड़ा रह कर स्वयं हलचल और नृत्य करता है जिससे उसके क्रिया-कलाप पुतलियों में हस्तांतरित होते रहते हैं। इनके साथ ही संचालक गीत गाता हुआ गद्यात्मक संवादों को भी बोलता है। मंच के साथ बैठे हुए तीन-चार संगीतकार ढोलक, हारमोनियम तथा झांझ बजाते हुए संगति करते हैं। लोक नाट्य जात्रा से यह सब काफी साम्यता रखता है।

ओड़िशा की छड़ पुतलियां आकार में छोटी लगभग 12 से 18 इंच लंबी होती हैं। उनमें भी जोड़ तो तीन ही होते हैं लेकिन उनके हाथ छड़ों के बजाए धागों से बंधे होते हैं। इस प्रकार वहां पर छड़ पुतलियां, धागा तथा छड़ पुतलियों का समन्वित रूप होती हैं। पुतली संचालक पर्दे के पीछे जमीन पर बैठकर उनका संचालन करते हैं।

गद्यात्मक संवाद कभी-कभार ही इस्तेमाल होते हैं। ज्यादातर संवाद गेय होते हैं। संगीत लोक धुनों तथा शास्त्रीय ओड़िसी धुनों का समन्वित रूप होता है। संगीत का आरंभ स्तुति से होता है तथा बाद में नाटक प्रस्तुत किया जाता है।

पश्चिमी बंगाल तथा आंध्र-प्रदेश की पुतलियों की तुलना में ओड़िशा की पुतलियां काफी छोटी होती हैं तथा पुतली नाटकों में गद्यात्मक संवाद नहीं होते।

छाया पुतली

भारत में अनेक प्रकार की छाया पुतलियों का प्रचलन है और विभिन्न प्रांतों में इसकी अनेक शैलियां विद्यमान हैं।

छाया पुतलियां चपटी होती हैं, अधिकांशत: वे चमड़े से बनाई जाती हैं। इन्हें पारभाषी बनाने के लिए संशोधित किया जाता है। पर्दे को पीछे से प्रदीप्त किया जाता है और पुतली का संचालन प्रकाश स्रोत तथा पर्दे के बीच से किया जाता है। दर्शक पर्दे के दूसरे तरफ से छायाकृतियों को देखते हैं। ये छायाकृतियां रंगीन भी हो सकती हैं। छाया पुतली की यह परंपरा ओड़िशा, केरल, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में प्रचलित है।

पुतली बनाने के लिए पशुओं की खाल को सावधानी से चुना जाता है और पारभासी बनाने के लिए संशोधित किया जाता है। संशोधन की विधि हर प्रान्त में अलग होती है। सावधानी से चमड़े पर आकृति की रूप रेखा बनाई जाती है। पहनावा और आभूषणों को चमड़े में सूक्ष्म छिद्रण से विशिष्टता से उभारा जाता है। पुतली बनाना एक बहुत ही सविज्ञ कला है।

A few puppets have jointed arms and hands, which are manipulated by rods. The Bommalattam puppets are the largest, heaviest and the most articulate of all traditional Indian marionettes. A puppet may be as big as 4.5 feet in height weighing about ten kilograms. Bommalattam theatre has elaborate preliminaries which are divided into four parts—Vinayak Puja, Komali, Amanattam and Pusenkanattam.

Rod Puppets

Rod puppets are an extension of glove-puppets, but often much larger and supported and manipulated by rods from below. This form of puppetry now is found mostly in West Bengal and Odisha. In Nadia district of West Bengal, rod-puppets used to be of human size like the Bunraku puppets of Japan. This form is now almost extinct. The Bengal rod-puppets which survive are about 3 to 4 feet in height and are costumed like the actors of Jatra, a traditional theatre form prevalent in the State. These puppets have mostly three joints. The heads, supported by the main rod, is joined at the neck and both hands attached to rods are joined at the shoulders. The technique of manipulation is interesting and highly theatrical. A bamboo-made hub is tied firmly to the waist of the puppeteer on which the rod holding the puppet is placed. The puppeteers each holding one puppet, stand behind a head-high curtain and while manipulating the rods also move and dance imparting corresponding movements to the puppets. While the puppeteers themselves sing and deliver the stylized prose dialogues, a group of musicians, usually three to four in number, sitting at the side of the stage provide the accompanying music with a drum, harmonium and cymbals. The music and verbal text have close similarity with the Jatra theatre.

The Odisha Rod puppets are much smaller in size, usually about twelve to eighteen inches. They also have mostly three joints, but the hands are tied to strings instead of rods. Thus elements of rod and string puppets are combined in this form of puppetry. The technique of manipulation is somewhat different. The Odisha rod-puppeteers squat on the ground behind a screen and manipulate. Again it is more operatic in its verbal contents since impromptu prose dialogues are infrequently used. Most of the dialogues are sung. The music blends folk tunes with classical Odissi tunes. The music begins with a short piece of ritual orchestral preliminary called *Stuti* and is followed by the play.

The puppets of Odisha are smaller than those from Bengal or Andhra Pradesh. Rod puppet shows of Odisha are more operatic and prose dialogues are seldom used.

Shadow Puppets

India has a richest variety and types and styles of shadow puppets.

Shadow puppets are flat figures. They are cut out of leather, which has been treated to make it translucent. Shadow puppets are pressed against the screen with a strong source of light behind it. The manipulation between the light and the screen make silhouettes or colourful shadows, as the case may be, for the viewers who sit in front of the screen. This tradition of shadow puppets survives in Odisha, Kerala, Andhra Pradesh, Karnataka, Maharashtra and Tamil Nadu.

ओड़िशा और केरल की छाया पुतली नाटक की विषयवस्तु अधिकतर रामायण से होता है जबकि आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में महाभारत और प्रादेशिक अनुश्रुतियों पर आधारित होती हैं।

कर्नाटक में छाया पुतली को तोगलु गोम्बेयेट्टा कहते हैं। ये साधारणत: आकार में छोटी होती हैं। सामाजिक परिवेश के अनुसार पात्रों के आकार बड़े-छोटे होते हैं। जैसे राजाओं और धार्मिक पात्रों के आकार बड़े होते हैं जबकि आम जनता और नौकरों के आकार छोटे होते हैं।

आन्ध्र प्रदेश की छाया नाटक को *तोलु बोम्मालट्टा* कहते हैं तथा इनकी परंपरा अत्यंत समृद्ध है। पुतलियाँ आकृति में बड़ी होती हैं और इनकी कमर, गर्दन, कंधा और घुटनों में जोड़ होते हैं। पुतलियाँ दोनों तरफ से रंगी जाती है जिससे पर्दे पर रंगीन छाया पड़ती है।

पुतली नाटकों का संगीत मुख्यत: इस क्षेत्र का शास्त्रीय संगीत होता है तथा उनकी कथाएं रामायण, महाभारत और पुराणों की होती है।

ओड़िशा की रावणछाया सभी में अत्यंत नाटकीय होती है। पुतलियां एकहरी होती हैं तथा उनमें कोई संधि नहीं होती। साथ ही चूंकि वे रंगीन भी नहीं होती इस कारण पर्दे पर उनकी छाया श्वेत-श्याम होती है। पुतलियों में जोड़ न होने के कारण उनका संचालन दक्षता से करना पड़ता है। ये पुतलियां मृग-चर्म की बनी होती हैं तथा इनका रूप अत्यंत नाटकीय होता है। मानव एवं पशु चरित्रों के साथ-साथ वृक्ष, पर्वत तथा रथ आदि भी इस्तेमाल किए जाते हैं। यद्यपि रावणछाया पुतलियां अपने आकार में दो फीट बड़ी नहीं होती और उनके घुटने भी जोड़ युक्त नहीं होते लेकिन फिर भी उनकी छाया एकदम लयात्मक एवं संवेदनशील होती है।

संगीत साधारण होता है तथा विषय-वस्तु भगवान राम की कथा होती है।

केरल का पारंपरिक पुतली नाटक थोलपावाकूथू कहलाता है तथा हमेशा रामायण ही इस की कथावस्तु होती है। इसे विशेष तौर पर मंदिरों में बनाए गए कूथूमदम नाट्यशाला में मंचित किया जाता है। इसकी पुतलियां भी मृग-चर्म की बनी होती है। चमड़े पर आकृतियों को रेखांकित करके काटा जाता है तथा उन्हें बिंदुओं, रेखाओं और छिद्रों से सजाया जाता है। फिर उन्हें विभिन्न रंगों से रंगा जाता है। सफेद पर्दे को दीपकों की सहायता से प्रकाशित किया जाता है और इन आकृतियों की छाया पर्दे पर प्रक्षेपित की जाती है।

इस नाटक के साथ मुख्यत: मद्दलम, इलाथलम और मंजीरे संगति करते हैं। शंख और चेंडा अन्य संगीत वाद्य यंत्र हैं।

प्रस्तुत पैकेज में आप थोड़ी सी ही पारंपरिक पुतलियों को देख पाएंगे। भारत में इस प्रकार की असंख्य पुतलियां हैं जो पौराणिक एवं दंत कथाओं के पात्रों को दर्शाती हैं। इन विभिन्न श्रेणियों की पुतलियों की जानकारी देने के निमित्त चुनाव सीमित करना पड़ा।

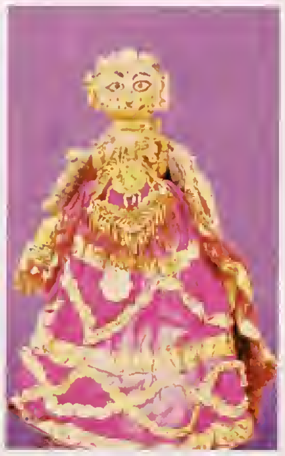

The animal hide for the puppet is carefully selected and then treated to make it translucent; the process varies with each region. A sketch of the figure is made on the leather and cut out carefully. Perforations are made to show ornaments and other details which are finely crafted. Puppet making is a highly sophisticated art.

The shadow puppet theatre of Odisha and Kerala draws heavily upon themes from the Ramayana while those of Andhra Pradesh and Karnataka adapt episodes from the Mahabharata and local legends.

The shadow theatre of Karnataka is known as Togalu Gombeyatta. These puppets are mostly small in size. The puppets however differ in size according to their social status, for instance, large size for kings and religious characters and smaller size for common people or servants.

Tholu Bommalatta, Andhra Pradesh's shadow theatre has the richest and strongest tradition. The puppets are large in size and have jointed waist, shoulder, elbows and knees. They are coloured on both sides. Hence, these puppets throw coloured shadows on the screen. The music is dominantly influenced by the classical music of the region and the theme of the puppet plays are drawn from the Ramayana, Mahabharata and Puranas.

The most theatrically exciting is the Ravanachhaya of Odisha. The puppets are in one piece and have no joints. They are not coloured, hence throw opaque shadows on the screen. The manipulation requires great dexterity, since there are no joints. The puppets are made of deer skin and are conceived in bold dramatic poses. Apart from human and animal characters, many props such as trees, mountains, chariots, etc. are also used. Although, Ravanachhaya puppets are smaller in size—the largest are not more than two feet and have no jointed limbs, they create very sensitive and lyrical shadows.

The music is simple, but the literary text including the vocal accompaniment is very much influenced by the Odissi music. The theme of the puppet play is exclusively drawn from the Rama legend.

The traditional shadow puppet play of Kerala is called Tholpavakoothu. The theme of Tholpavakoothu is always the story of Ramayana. It is performed in a specially built playhouse called Koothumadam in the temple premises. The puppets of various characters are made of deer skin. The figures are drawn on skin, cut out and embellished with dots, lines, holes, and painted in different colours. A white screen is illuminated with the help of oil lamps and shadows of these figures are projected on the screen. The chief accompaniments for Tholpavakoothu are a *maddalam*, *ilathalam*, *ezhupara* and cymbals. Other musical instruments like the *shankha* and *chenda* are also played.

In this package, we shall see a few traditional puppets. India has a large variety of such puppets depicting various characters from legends and myths. Only a few have been selected keeping in mind representation of the various categories.

छात्रों एवं अध्यापकों के लिए गतिविधियां

प्रस्तुत 24 चित्रों को आप अपने स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान या कक्षा में प्रदर्शित कर सकते हैं। शीर्षक तथा विवरण सहित इन चित्रों को गत्ते पर लगाया जा सकता है। अध्यापकगण एक बार में कुछ एक चित्रों को लेकर छात्रों के मनोरंजन को ध्यान में रखकर उन्हें इन रचनात्मक गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं।

संलग्न चित्रों के निरीक्षण, प्रशंसा तथा विचार-विमर्श करने में सुविधा हो इसके लिए विभिन्न प्रकार की पुतलियों के निर्माण एवं संचालन की आसान तकनीकें बताई जा रहीं हैं।

छात्रों को कोई विषय सुझाकर उन्हें कथा के वर्णन के लिए पुतलियां बनाने को कहें। प्रारंभिक तौर पर छात्र गत्ते की सरल दस्ताना पुतली या छाया पुतली बना सकते हैं। छात्रों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वे पात्र को आकार दें तथा दूसरों द्वारा लिखित संवादों को याद कर बोलने के स्थान पर स्वयं रचित संवाद बोलें।

छात्र बेकार पड़ी पुरानी गेंदों, जुराबों, लोहे, पत्तियां, कपड़ों, गत्ते के डिब्बों तथा कागज आदि से पुतलियां बना सकते हैं। वैसे किसी भी प्रकार की सामग्री इनके निर्माण में इस्तेमाल की जा सकती है।

अनुभवी छात्रों को डिज़ाइन एवं रंग के सौंदर्य को समझाया जा सकता है तथा उनमें भाषा के लावण्य के विकास के लिए अभ्यास करवाया जा सकता है।

विभिन्न आयु वर्गों के बच्चों द्वारा पुतली-निर्माण एवं उनके प्रदर्शन से उनकी प्रतिभा को पहचाना जा सकता है।

जब वे कोई विषय-वस्तु विकसित करें, उनकी भाषा की पकड़ मजबूत हो जाए तो पुतलियां बनाते हुए वे चित्रकला तथा मूर्तिकला की तकनीक सीख सकते हैं। पुतलियों के संचालन से उन्हें लय का पता चलेगा तथा संवादों को बोलने में उनके अंदर छिपे संगीत का भी।

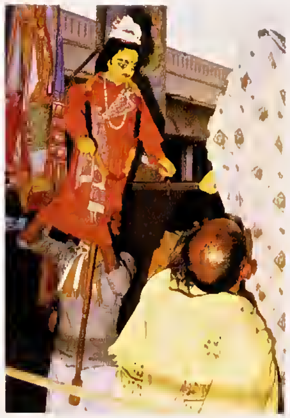

Activities for Students and Teachers

These 24 pictures can be displayed in the classroom or at any prominent place in the school. The pictures may be stuck on cardboard with the title and description. The teacher can work with a few pictures at a time, ensuring students enjoyment in learning by involving them in creative activities.

In order to enhance the effect of studying, appreciating and discussing the pictures in this package, the simplest techniques of making and manipulating different types of puppets have also been presented.

Give a theme to the students and ask them to prepare puppets to enact a story. In the beginning, students can use simple finger or glove puppets and shadow puppets made of cardboard. The students should be encouraged to devise the character and use impromptu dialogues and avoid studying written scripts and learning dialogues prepared by others.

The students can make puppets from waste material such as old balls, socks, tins, leaves, rags, cardboard boxes, paper etc. Any material can be used to make a puppet.

Older students can be made to consciously understand the aesthetics in design and colour and conduct exercises to develop an understanding of the beauty in language.

Making puppets and putting up performances by children of any age-group help in discovering their hidden talents.

When they develop a theme—the story and the language skills are improved, while working with their hands to make the puppets they are involved in studying simple sculpture and painting techniques and while manipulating puppets, they acquire a sense of rhythm in movement and learn the musical content in the presentation of dialogues.

धागा पुतली बनाने का तरीका
Construction of String Puppet

लकड़ी का फ्रेम
Wooden Frame

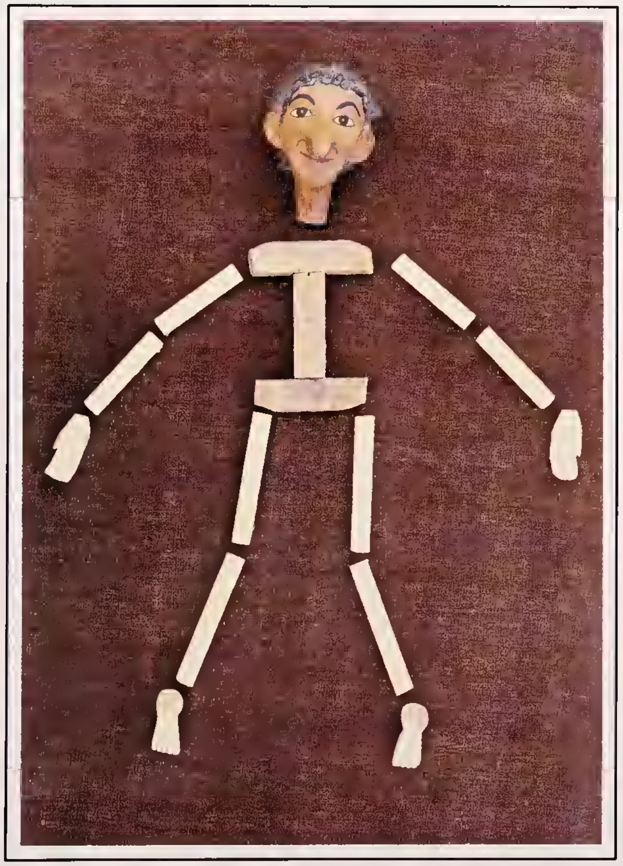

आकृति के अनुसार लकड़ी के विभिन्न टुकड़े काटे जाते हैं
Different pieces of wood are shaped as per requirement of the figure

विभिन्न हिस्सों को जोड़ा जाता है।
Different parts are joined together

जुड़ी हुई आकृति
A complete figure

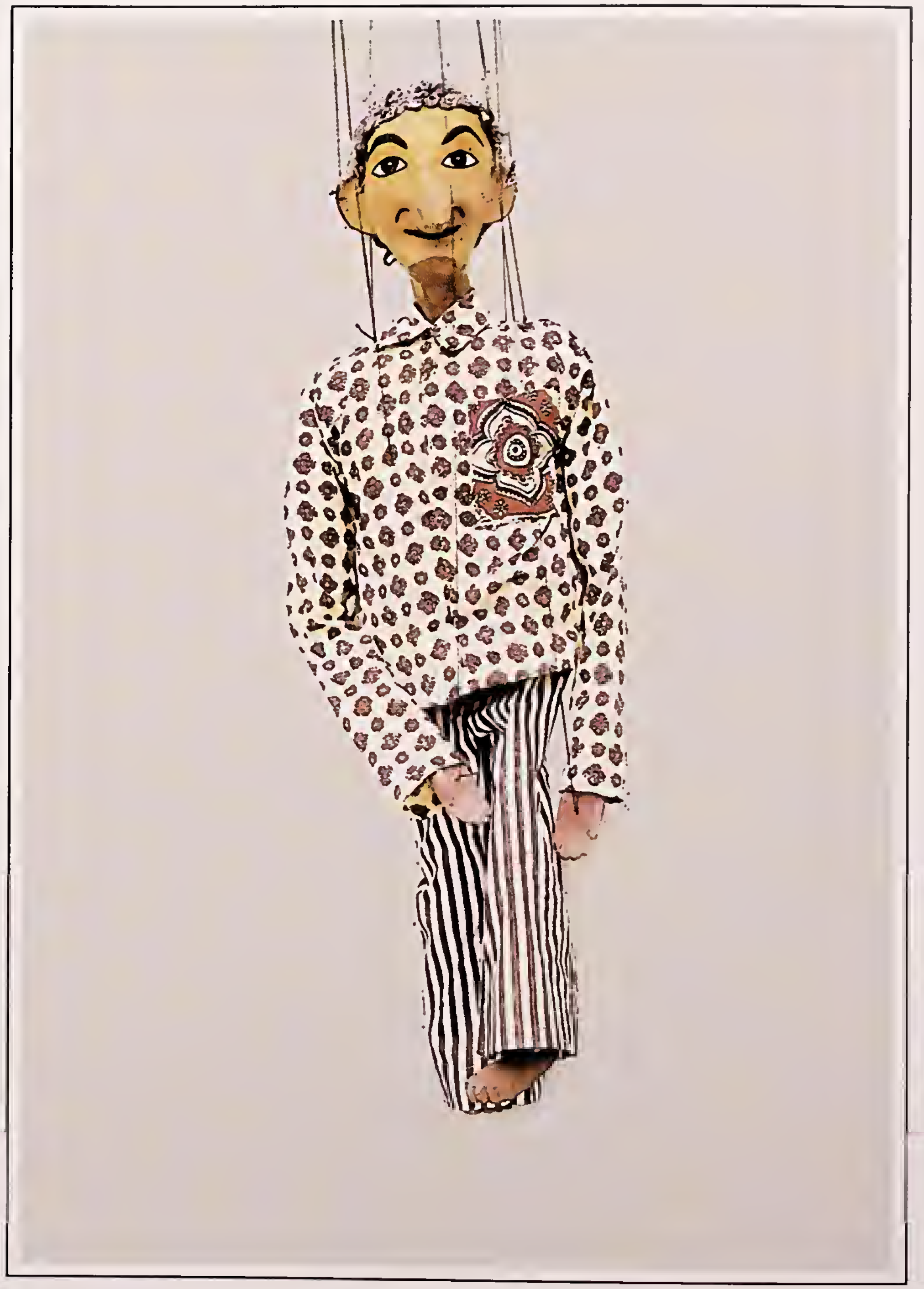
धागा पुतली
String Puppet

धागा पुतली चलाने का तरीका
Manipulation of string puppet

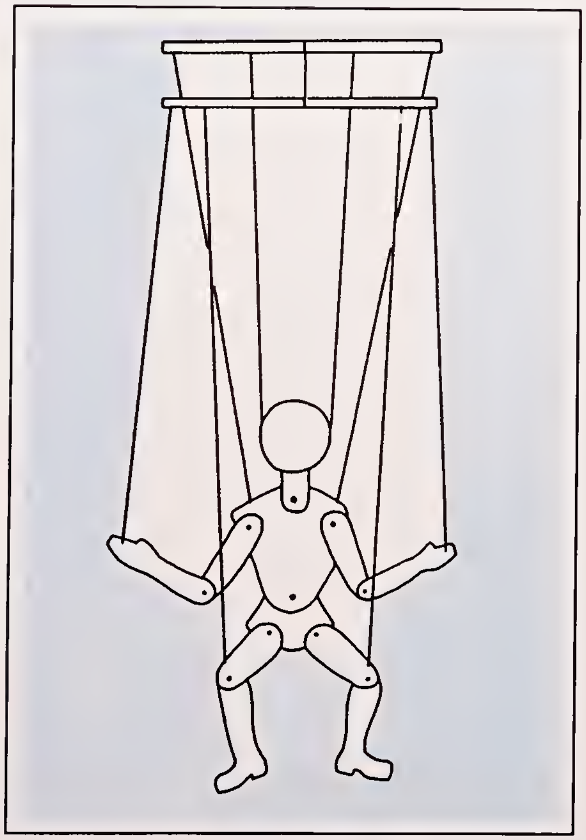

धागा पुतली संचालित करने के लिए कंट्रोल
Control different for manipulation of a string puppet

मूल अवस्था
Basic Position

सिर का संचालन
Manipulation of head

हाथों का संचालन
Manipulation of hands

पैरों का संचालन
Manipulation of legs

संपूर्ण पुतली का संचालन
Manipulation of the puppet

छड़ पुतली बनाने का तरीका
Construction of Rod Puppet

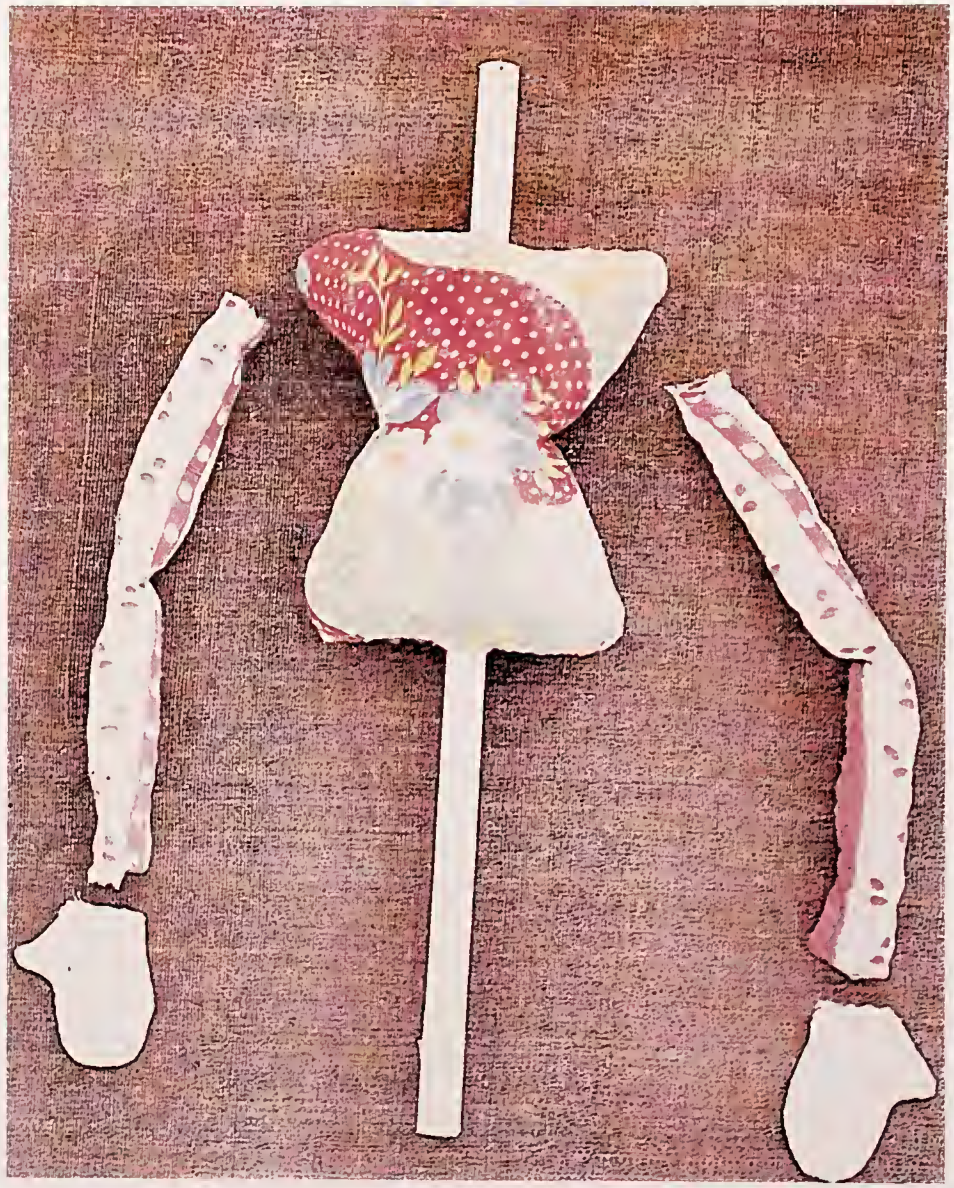

पुतली के विभिन्न अंग सिले कपड़ों से बनाए जाते हैं, फिर उनमें रद्दी कपड़े भरे जाते हैं।

Different parts of the body are made of clothes stuffed with waste material.

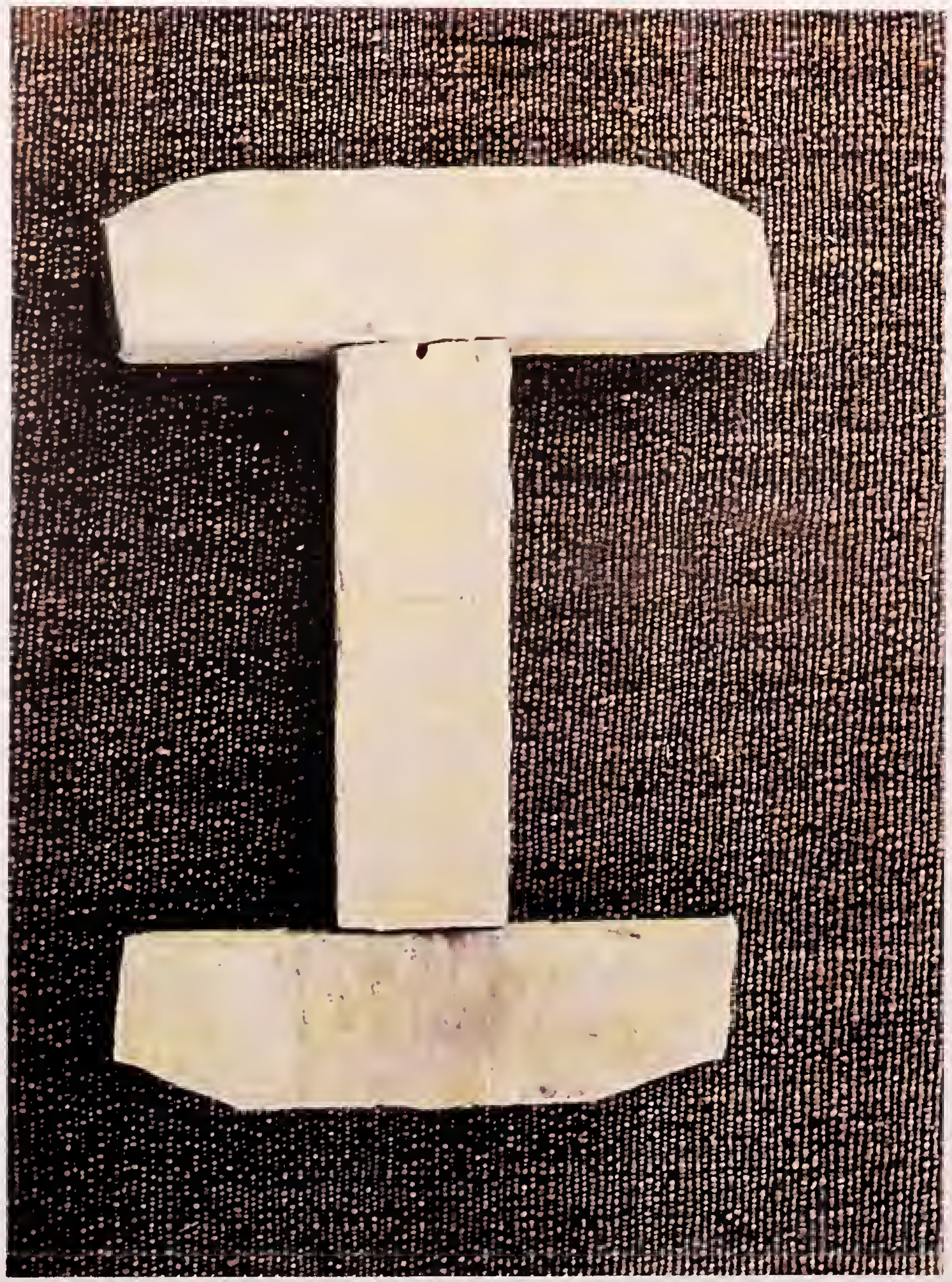

लकड़ी का फ्रेम

Wooden Frame

पुतली के लिए वस्त्र बनाए जाते हैं और चलाने के लिए हाथों पर छड़ लगाए जाते हैं।

Costume is prepared for the body and rods are attached to the hands for manipulation.

छड़ पुतली

Rod Puppet

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

1. धागा पुतली, कठपुतली, राजस्थान

राजस्थान की धागा पुतलियां कठपुतली के नाम से जानी जाती है। पुतली का सिर तथा पगड़ी लकड़ी के एक ही टुकड़े से बनाई जाती है। इन पुतलियों के पैर नहीं होते हैं पर ये पुतलियां लहराती घाघरा पहनती हैं और इनका शरीर तथा हाथ कपड़े के टुकड़े को भर कर बनाए जाते हैं। अक्सर पुतली के चेहरे को पीले रंग से रंगा जाता है तथा चेहरे पर लंबी नाक और सुरूचिपूर्ण आंखें-भौहें बनाई जाती हैं। यहां एक राजस्थानी पुतली संचालक को कठपुतली बनाते हुए दिखाया गया है।

2. सपेरा, कठपुतली, राजस्थान

कठपुतली का एक लोकप्रिय कार्यक्रम अमर सिंह राठौर नामक पौराणिक वीर की कहानी पर आधारित है। ऐसा विश्वास है कि यह किस्सा मुगल बादशाह शाहजहां के समय में हुआ था। पुतली कार्यक्रम में अमर सिंह राठोर के जीवन की घटनाएं और दरबार मनोरंजन की श्रृंखला के कार्यक्रम जैसे– जादू का खेल, कलाबाजी नृत्य, सपेरे का खेल आदि प्रस्तुत किए जाते हैं, जिन्हें कथा रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

प्रस्तुत चित्र में आप बादशाह के दरबार में राजसी व्यक्तियों का मनोरंजन करते हुए पुतली सपेरे को देख सकते हैं।

3. अमर सिंह राठौर, अपने दरबारियों के साथ, कठपुतली, राजस्थान

प्रस्तुत चित्र में पौराणिक वीर अमर सिंह राठौर के जीवन के एक प्रसंग को प्रदर्शित किया गया है। आप बायीं ओर परंपरागत राजस्थानी पगड़ी पहने हुए अमर सिंह राठौर को देख सकते हैं। वे मुगल सेनापति शरावत खान से बात कर रहे हैं, जिन्हें उस समय की मुगल वेशभूषा में देखा जा सकता है। ध्यान से देखिए, सभी पुतलियों में से केवल वही एक है, जिन्हें दाढ़ी सहित दिखाया गया है। दरबार के अन्य राजसी व्यक्ति इन दोनों के मुकाबले को बहुत रूचि से देख रहे हैं।

4. दरबार नर्तकी (नृत्यांगना), कठपुतली, राजस्थान

कठपुतली मनोरंजन साधनों के रंगपटल को प्रदर्शित करती है जिन्हें अभिनीत मुख्य कथा के साथ अलंकृत किया जाता है। राजस्थान की कठपुतली शैली की सर्वाधिक लोकप्रिय पुतली है– दरबार नर्तकी (नृत्यांगना)। अन्य पुतलियों को तीन धागों द्वारा परिचालित किया जाता है, जबकि इस पुतली को 5 से 9 धागों द्वारा परिचालित किया जाता है। पुतली चालक परिचालन में अपनी योग्यता के अनुसार विविध प्रकार की बहुत ही मनोहर नृत्य मुद्राओं को प्रदर्शित करने में सक्षम होता है।

5. परिचालन, कठपुतली, राजस्थान

पुतलीकार मंच के पीछे खड़े हो कर अपने दोनों हाथों में पकड़े हुए छोटे अवलम्ब से जुड़े धागों की सहायता से पुतलियों को परिचालित करता है। कभी-कभी ये धागे पुतलीकार की उंगलियों से भी बांधे जाते हैं। अधिकतर पुतलियों को केवल तीन ही धागों की सहायता से परिचालित किया जाता है। इस संदर्भ में दरबार नर्तकी (नृत्यांगना) अपवाद है, कारण इसमें पुतलीकार 5 से 9 धागों का उपयोग करता है। पुतलीकार, कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय परंपरागत राजस्थानी वेशभूषा धारण करते है।

6. कृष्ण, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

गोम्बेयेट्टा-कर्नाटक की परंपरा धागा पुतली है। ये पुतलियां बहुत ही सुरूचिपूर्ण होती हैं और इनकी वेशभूषा तथा मुख-सज्जा कर्नाटक की परंपरागत नाट्य कला शैली-यक्षगान के समान होती है। इन पुतलियों की पैरों सहित पूर्ण विकसित आकृतियां होती हैं तथा कंधे, कोहनियों और घुटनों पर जोड़ होते हैं।

प्रत्येक आकृति के साथ पांच या अधिक धागे जोड़े जाते हैं और पुतलीकार पुतली को परिचालित करने के लिए अवलंब का उपयोग करता है। गोम्बेयेट्टा में महाकाव्य ओर पुराणों के प्रसंगों को प्रस्तुत किया जाता है।

प्रस्तुत चित्र में, कृष्ण की पुतली आकृति को सुदर्शन चक्र पकड़े हुए अपनी परंपरागत वेशभूषा में देखा जा सकता है। यह पुतली स्वयं में ही कला का एक नमूना है।

7. अर्जुन, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

इस चित्र में प्रदर्शित पुतली महाभारत के पंच पांडवों में से एक भाई-अर्जुन की है। अर्जुन को उसके धनुष-बाण के साथ दिखाया गया है। चूंकि पुतली में बहुत से जोड़ होते हैं और पुतलीकार परिचालन के लिए कम से कम पांच धागों का प्रयोग अवश्य करता है, अत: पुतली कला शैली में विविध प्रकार की जटिल मुद्राएं भी प्रदर्शित की जा सकती है।

8. कृष्ण तथा अर्जुन, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

इस चित्र में महाभारत की ही एक दूसरी कथा को दर्शाया गया है। भगवान विष्णु के अवतार, महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने कृष्ण भगवान युद्ध भूमि में मोहग्रस्त अर्जुन को उपदेश दे रहे हैं। उनके यही उपदेश भगवद् गीता में बद्ध है।

आप देख सकते है कि पुतली संचालक किस प्रकार की जटिल दक्षता से पुतलियों का संचालन कर रहा है। भगवान कृष्ण तथा अर्जुन की आकृतियों के अलावा रथ भी दर्शाया गया है जिसे मंच के कोने से धागे को खींच कर चलाया जाता है।

9. भीम, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

इस चित्र में प्रस्तुत पुतली महाभारत के पांडव भाईयों में से द्वितीय भाई, भीम की है। उसे अपने बड़े आकार और गदा से पहचाना जा सकता है।

पुतली के साथ पांच या पांच से अधिक धागे जोड़े जाते हैं और पुतलीकार विविध प्रकार की गतियों (मुद्राओं) को प्रस्तुत करने के लिए परिचालन में अपनी कुशलताओं का उपयोग करते हैं।

10. रावण, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

इस चित्र में रामायण के एक मुख्य पात्र, दस मस्तकों वाले दानव रावण की पुतली दर्शाई गई है। जगत के रचियता ब्रह्माजी से प्राप्त आशीर्वाद के कारण रावण को दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं। भगवान राम के हाथों लंका के युद्ध में मारे जाने वाले रावण की कथा से हर भारतीय परिचित है।

11. रावण का दरबार, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

गोम्बेयेट्टा के पुतली नाटक वहां के पारंपरिक नृत्य नाटक यक्षगान का पूर्णत: अनुकरण करते हैं। इसी कारण वहां की पुतलियां तथा रंगमंच यक्षगान के पात्रों तथा मंच जैसे होते हैं।

प्रस्तुत चित्र में रामायण की एक घटना को दर्शाया गया है। बाली का पुत्र अंगद भगवान राम का दूत बन कर रावण के दरबार में आता है।

12. संचालन, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

गोम्बेयेट्टा की पुतलियों में हर पुतली से पांच या उससे अधिक धागे जुड़े रहते हैं। फिर इन धागों को छड़ जैसी लकड़ी के साथ बांधा जाता है। इसी लकड़ी की सहायता से पुतली संचालक पुतलियों का संचालन करता है। आमतौर पर एक संचालक केवल एक ही पुतली का संचालन करता है, पर जब किसी जटिल क्रिया-कलाप को साकार करना होता है तो दो-तीन

संचालक भी एक पुतली का संचालन करते हैं। किसी भी पुतली नाटक में एक बार में चार से पांच पुतलियों का संचालन किया जाता है।

इस चित्र में आप महाभारत के उस कथांश को देख रहे हैं जिसमें भीम द्रोपदी के सम्मान की रक्षा के लिए शपथ ले रहा है। इसी चित्र में आप मंच के पीछे से पुतलियों का संचालन करते संचालकों को भी देख सकते हैं।

13. नर्तक, बोम्मालट्टम, तमिलनाडु

बोम्मालट्टम, तमिलनाडु का पारंपरिक पुतली-नाटक है। इसकी पुतलियां सारे भारत की धागा पुतलियों में सब से वजनी और बड़े आकार की होती है। एक पुतली लगभग साढ़े चार फीट ऊंची तथा 10 किलो वजन की होती है। वे लकड़ी की पूरी विकसित तथा मानवीय शरीर के संधि-स्थलों जैसी जोड़ युक्त होती है। पुतलियों के परिधान यहां के पारंपरिक नाटक के परिधान जैसे होते हैं।

प्रस्तुत चित्र में दृष्टिगोचर पुतली स्त्री नर्तक की है।

14. संचालन, बोम्मालट्टम, तमिलनाडु

बोम्मालट्टम की पुतली संचालन कला धागे तथा छड़ का सम्मिलित रूप है।

धागा-पुतलियों की भांति उनका संचालन ऊपर की तरफ से किया जाता है पर साथ ही हाथों से दो छड़ें भी जुड़ी रहती है। पुतली से जुड़े धागे लोहे के एक घेरे से बंधे होते है जो संचालक के सिर पर ताज की भांति रखा जाता है तथा छड़ें उसके हाथों में होती हैं। जब पुतली के संधियुक्त घुटनों का संचालन करना होता है तब एक दूसरा संचालक मुख्य संचालक की सहायता करता है।

15. द्रौपदी, बोम्मालट्टा, आंध्र प्रदेश

बोम्मलट्टा का शाब्दिक अर्थ है गुड़ियों का नृत्य। आंध्र प्रदेश की पुतलियां भी काफी बड़ी, वजनी तथा पूर्ण विकसित तो होती ही है साथ ही मानव अंगों की भांति संधियुक्त भी। ये अत्यंत शैलीगत होती हैं। प्रस्तुत चित्र में पांचाल के राजा ध्रुपद की पुत्री तथा पांडवों की पत्नी द्रोपदी को दर्शाया गया है।

16. कृष्ण, सखी-कुनढेई, ओड़िशा

सखी कुनढेई ओड़िशा की पारंपरिक पुतली कला है। ये पुतलियां हल्की लकड़ी से बनाई जाती है तथा इनके पैर नहीं होते। राजस्थान की कठपुतलियों की भांति इनका भी लहराता घाघरा होता है। इनके हाथ संधियुक्त होते हैं। किंतु मुख्य पात्रों का प्रतिनिधित्व करने वाली पुतलियों की गर्दन, कंधों और कोहनियों पर भी जोड़ होते हैं। यहां के पारंपरिक रंगमंच जालन से मिलते-जुलते पुतलियों के भी परिधान होते है।

प्रस्तुत चित्र भगवान कृष्ण का है। यहां के ज्यादातर पुतली नाटक भगवान कृष्ण की कथा पर आधारित होते है।

17. राधा, सखी-कुनढेई, ओड़िशा

इस चित्र में दर्शाई गई पुतली ओड़िशा की पारंपरिक धागा पुतली सखी कुनढेई की है। उड़ीया में सखी का मतलब है सहेली तथा ये पुतलियां खूबसूरत गुड़िया होती है। इन्हें सखी कुनढेई कहा जाता है।

इन पुतलियों के पैर नहीं होते तथा इनका लंबा लहराता घाघरा होता है। धागा पुतलियों की तुलना में इनमें ज्यादा जोड़ होते हैं इस कारण इनमें चंचलता अधिक होती है तथा संचालन में आसानी। इस चित्र की स्त्री आकृति भगवान कृष्ण की बचपन की मित्र राधा की है।

18. राम और लक्ष्मण, पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल के परम्परागत छड़ पुतली को पुतुल नाच कहते है। छड़ पुतलियां आकार में बड़ी होती हैं और मंच के नीचे से छड़ियों के सहारे संचालित होती हैं। ये पुतलियां एक निर्दिष्ट क्षेत्र में कलात्मक ढंग का अनुसरण करती है और लकड़ी से तराशकर बनाई जाती है। इस चित्र में पश्चिम बंगाल के पुतुल नाच से राम और लक्ष्मण को "सीता हरण" के एक दृश्य में दिखाया गया है। राम का रंग और वेशभूषा ध्यान देने योग्य है, इसका लोक नाटक के ढंग में अनुसरण है।

19. रावण, पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

प्रस्तुत चित्र में दृष्टिगोचर पुतली पश्चिम बंगाल के छड़ पुतली नाटक की है। लकड़ी को काट कर बनाई गई इन पुतलियों के पैर नहीं होते। ये तीन फीट ऊंची तथा 8-10 किलो वजन की होती है। यहां दस मस्तक वाले दानव-रावण को दर्शाया गया है। पृष्ठभूमि का भित्तिचित्र रावण के राजमहल के अशोकवन का है।

20. नर्तक, पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न पुतली नाटक का प्रदर्शन अलग-अलग होता है। द्वितीयत: क्रियात्मक कलाओं की भांति ही पुतली नाटक का प्रदर्शन सुन्दर और वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है। इस चित्र में, पश्चिम बंगाल के पुतुल नाच में परिचायक पुतुल सखी (नर्तक) को दिखाया गया है। आराधना के नृत्य के लिए इस पुतली का उपयोग होता है।

21. संचालन, पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

छड़ पुतली दस्ताना पुतली का ही विस्तारित रूप है। छड़ पुतली संचालक कमर पर एक बांस की नाभिटोपी बाँधता है जिस पर वह पुतली की छड़ का सहारा देता है। पुतली संचालक कपड़े या दृश्याबन्ध से अपने आप को ढक लेता है। पुतली के शरीर और सिर का संचालन पुतली की भीतरी छड़ से किया जाता है। साधारणत: इन पुतलियों के पैर और पंजे नहीं होते हैं। पुतली के हाथ का नियंत्रण पतले तारों से किया जाता है और संचालक की हर एक गतिविधि पुतली पर झलकती है। इस प्रकार के संचालन के कारण ही ये पुतलियां सजीव दिखाती हैं। इस चित्र में पश्चिम बंगाल के छड़ पुतली का संचालन दिखाया गया है। चित्रित चरित्र रामायण के लक्ष्मण का है।

22. घुड़सवार, यमपुरी, बिहार

बिहार की पारंपरिक छड़-पुतली कला यमपुरी कहलाती है। ये लकड़ी की बनी होती है तथा पश्चिम बंगाल और ओड़िशा की छड़-पुतलियों के विपरीत इकहरी बिना किसी जोड़ की होती है। संधि-स्थल न होने के कारण इनके संचालन का तरीका अन्य छड़ पुतलियों से भिन्न होता है तथा उसके लिए ज्यादा दक्षता की आवश्यकता पड़ती है। यह चित्र एक अश्वरोही का है।

23. माँ और जमींदार, तारेर पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल की परंपरागत धागा पुतली तारेर पुतुल नाच के नाम से जानी जाती है। ये पुतलियाँ अत्यंत सुरुचिपूर्ण बनी होती हैं और इनकी वेशभूषा तथा रूप-सज्जा पश्चिम बंगाल की परंपरागत नाट्यकला शैली "जात्रा" से मिलती-जुलती होती है। इनकी गोल आकृति, बिना पैरों की होती है और इनके कंधों, कोहनियों तथा कलाइयों पर जोड़ होते हैं। ये पुतलियां 2 से 3 फुट तक ऊँची होती है।

प्रत्येक पुतली के साथ चार से पाँच धागे जुड़े होते हैं और पुतली संचालक पुतली को चलाने के लिए एक लकड़ी के टेक का उपयोग करता है।

प्रस्तुत चित्र में, बंगाल के 18वीं शताब्दी के पौराणिक (कल्पित) सूफी संत "लालन फकीर" के जीवन का एक प्रसंग प्रदर्शित है। बायीं ओर लालन फकीर की माँ बंगाल की विशेषतासूचक वेशभूषा पहने हुए है। वे जमींदार के साथ बात कर रही हैं, जिन्हें उस समय की विशिष्ट बंगाली वेशभूषा पहने देखा जा सकता है।

24. संचालन, तारेर पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

'तारेर पुतुल नाच' में, आमतौर पर प्रत्येक पुतली संचालक एक बार में एक पुतली को परिचालित करता है, पर जब जटिल क्रियाओं अथवा (सं) चलनों को दिखाना हो, तब एक ही पुतली का संचालन करने के लिए दो अथवा तीन व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत चित्र में, 18वीं शताब्दी के बंगाल के पौराणिक (कल्पित) सूफी संत 'लालन फकीर' के जीवन का एक प्रसंग प्रस्तुत है। इसमें हम पुतलियां चलाते हुए पुतली संचालकों को भी देख सकते हैं।

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

1. String Puppet, Kathputli, Rajasthan

The string puppets of Rajasthan are known as *Kathputli*. The head and the head-dress is carved out of a single piece of wood. These puppets have no legs but wear a flowing skirt and their body and hands are stuffed with rags. The face is usually painted yellow with a large nose and stylised eyes and eyebrows. Here a Rajasthani puppeteer is seen making a *Kathputli*.

2. Snake Charmer, Kathputli, Rajasthan

One of the popular *Kathputli* shows is based on the story of a legendary hero named Amar Singh Rathore. He is believed to have lived during the rule of the Mughal Emperor Shahjahan. The puppet show presents incidents from his life and a series of court entertainment items such as magic shows, acrobatic dances, snake charmers, etc. are interwoven into the main story.

In this picture, you see the puppet snake charmer entertaining the nobles in the Emperor's court.

3. Amar Singh Rathore with his courtiers, Kathputli, Rajasthan

In this picture, an episode from the life of the legendary hero Amar Singh Rathore is depicted. You see Amar Singh on the left wearing a typical Rajasthani head-dress. He is in dialogue with the Mughal General Sharawat Khan, who is seen in the Mughal costume of that period. Notice, he is the only one of the puppets who is shown with a beard. Other nobles in the court are watching the confrontation between the two with great interest.

4. Court dancer, Kathputli, Rajasthan

The *Kathputli* show has a repertoire of entertainment items which are interspersed with the main story that is being enacted. One of the most popular puppets of the *Kathputli* form of Rajasthan is the Court dancer. Unlike other puppets which are manipulated with three strings, this puppet is manipulated with 5 to 9 strings. The puppeteer is able to show a variety of very graceful dance movements according to his ability and dexterity in manipulation.

5. Manipulation, Kathputli, Rajasthan

The Puppeteer stands behind the stage and manipulates the puppets with strings attached to a small prop which he holds in both hands. Some times the strings are tied to the fingers of the puppeteer, most puppets are manipulated by just three strings, the court dancer being an exception, for which the puppeteer uses 5 to 9 strings. The puppeteer white presenting the show wears traditional Rajasthani costume.

6. Krishna, Gombeyatta, Karnataka

Gombeyatta is the traditional string puppet of Karnataka. The puppets are highly stylised and their costumes and make-up are similar to *Yakshagana*, the traditional theatrical form of Karnataka. They have rounded figures with legs and joints at the shoulders, elbows and the knees.

Five or more strings are attached to each of the figures and the puppeteer uses a prop to manipulate the puppet. In *Gombeyatta*; episodes from the epics and Puranas are presented.

In this picture, the puppet figure of Krishna in his traditional costume holding the Sudarshan Chakra is seen. The puppet figure itself is a work of art.

7. Arjuna, Gombeyatta, Karnataka

The puppet shown in this picture is that of Arjuna, one of the five Pandava brothers of the *Mahabharata*. Arjuna is characterised by his bow and arrow. Since the puppet has many joints and the puppeteer uses a minimum of five strings, for the manipulation, a variety of complicated movements can be depicted in this form of puppetry.

8. Krishna and Arjuna, Gombeyatta, Karnataka

In this picture, another episode from the *Mahabharata* is depicted. Krishna, the a*vatara* of Vishnu, who is also acting as Arjuna's charioteer is giving him advice, *upadesha* on the battlefield of Kurukshetra. The compilation of these verses are in the *Bhagwad Gita*.

You can see the puppeteer using complicated skills to manipulate the puppets. Apart from the two figures Arjuna and Krishna, there is a chariot which is moved by pulling the strings from the wings of the stage.

9. Bhima, Gombeyatta, Karnataka

The puppet shown in this picture is that of Bhima, the second of the Pandava brothers of the *Mahabharata*. He can be identified by his large size and the mace he carries.

Five or more strings are attached to the puppet and the puppeteer uses his skills in manipulation to produce a wide range of movements.

10. Ravana, Gombeyatta, Karnataka

The puppet shown in this picture is of Ravana, the ten headed demon king. One of the main characters in the epic, *Ramayana*, Ravana possessed mystical powers due to a boon granted to him by Lord Brahma, the creator of the universe. The story of Ravana who was killed in the battlefield of Lanka by Lord Rama, is familiar to every Indian household.

11. Ravana's court, Gombeyatta, Karnataka

Gombeyatta puppet theatre closely follows *Yakshagana*, the traditional live theatre form of Karnataka. The puppets of Gombeyatta resemble the actors of *Yakshagana* and the sets are also designed like the *Yakshagana* stage.

In this picture, an episode from the epic, *Ramayana* is depicted Angad, the son of Bali has come to Ravana's court, as a representative of Rama.

12. Manipulation, Gombeyatta, Karnataka

Gombeyatta puppets have five or more strings attached to each figure. These strings are in turn tied to a rod-like wooden props. The puppeteer manipulates the puppets with the help of these props. Generally one puppeteer manipulates one puppet, but when some complicated movements are to be shown, two or three puppeteers may co-operate to manipulate one figure in a show, there may be four to five puppets being manipulated at the same time.

In this picture, we see an episode from the *Mahabharata* where Bhima is taking an oath to avenge the honour of Draupadi. You can also see the puppeteers manipulating puppets from behind the stage.

13. Dancer, Bommalattam, Tamil Nadu

Bommalattam is the traditional puppet theatre from Tamil Nadu. These puppets are the largest and the heaviest of all traditional Indian string puppets. A puppet may be as long as 4.5 ft. in height and weigh about 10 kgs. They are made of wood and have full rounded figures with joints usually at shoulders, elbows, hips, knees, ankles and sometimes even at the wrists. The costume of the puppets are like the traditional human theatre of this region.

The puppet shown in this picture is of a female dancer.

14. Manipulation, Bommalattam, Tamil Nadu

The manipulation technique of *Bommalattam* combines elements of both strings and rods. Like other string puppets they are suspended and manipulated from above, but two rods are also attached to the hands. The strings from the puppet are tied to an iron ring fitted on the head of the puppeteer like a crown, and the rods are held in his hands. When the puppet is required to move its jointed limbs other than the hands, another puppeteer joins the main puppeteer to manipulate the puppet.

15. Draupadi, Bommalatta, Andhra Pradesh

Bommalatta, literally means, the dance of dolls. The string puppets of Andhra Pradesh are quite large and heavy and have full rounded figures with joints usually at shoulders, elbows, hips, knees, ankles and even wrists. The *Bommalatta* puppets are highly stylised. This picture shows, Draupadi, the daughter of king Draupada of Panchala and the wife of the Pandavas of *Mahabharata*.

16. Krishna, Sakhi-Kundhei, Odisha

Sakhi-Kundhei is the traditional puppet of Odisha. These string puppets are made of light wood and have no legs. Like *Kathputlis* of Rajasthan, they have flowing skirts. The puppets are made of wood and have joints on their hands. Puppets representing major characters also have joints at their neck, shoulders and elbows. Five to seven strings are attached to a puppet figure. The costume is more or less similar to the Jatra folk theatre of this region.

The puppet shown in the picture is of Lord Krishna. Most of the puppet plays are based on legends of Krishna.

17. Radha, Sakhi-Kundhei, Odisha

The puppet depicted in this picture belongs to the string puppet tradition of Odisha known as *Sakhi-Kundhei. Sakhi* in Odisha means a female companion and since most of these puppets are beautiful dolls, they came to be known as *Sakhi Kundhei.*

These puppets have no legs and have long flowing skirts. The puppets have more joints when compared to string puppets and are, therefore, more versatile, articulate and easy to manipulate. The female figure depicted in this picture is of Radha, Lord Krishna's childhood companion.

18. Rama and Lakshmana, Putul Nautch, West Bengal

The traditional rod puppet form of West Bengal is known as *Putul Nautch*. Rod puppets, usually big in size, are supported and operated by rods from below the stage. They are carved from wood and follow the various artistic styles of a particular region. Rama and Lakshmana from the episode *Sita Haran* in the *Putul Nautch* of West Bengal is seen in the picture. Notice the colour of Rama's face and the costumes which are styled in conformity with the local theatre styles.

19. Ravana, Putul Nautch, West Bengal

The puppet shown in this picture belongs to the Rod puppet theatre of West Bengal. Most of these puppets carved out of wood, have no feet or legs. These puppets are about 3 feet high and weigh around 8 to 10 kgs. Here, the demon king Ravana is portrayed with his ten heads. The painting shown in the background is of '*Ashokavan*', Ravana's famous palace garden.

20. Dancer, Putul Nautch, West Bengal

The performance of the puppet theatre also vary according to the region and kind of puppets used. As in other performing arts, there is a stylised way of presentation. In this picture, *Sakhi* (dancer), the introductory puppet used in Putul Nautch of West Bengal is seen. This puppet may be used for dance as part of the invocation.

21. Manipulation, Putul Nautch, West Bengal

Rod Puppets are an extended form of glove puppets. A rod puppeteer ties a bamboo hub around his waist on which he places the supporting rod of the puppet. The puppeteer conceals himself behind a painted cloth. The rod inside the figure is used to control the body and the head movement. These puppets generally have no legs or feet. The hands of the puppet are controlled by thin wires and every movement of the puppeteer is reflected in the puppet. Because of this style of manipulation, the puppets appear almost realistic. Seen here is the manipulation of the rod puppet of West Bengal. The character is that of Lakshmana from the *Ramayana*.

22. Man riding a horse, Yampuri, Bihar

The traditional rod puppet of Bihar is known as *Yampuri.* These puppets are made of wood. Unlike the traditional rod puppets of West Bengal and Odisha, these puppets are in one piece and have no joints. As these puppets have no joints the manipulation is different from other rod puppets and requires greater dexterity. The picture shown here is of a man riding a horse.

23. Mother and Zamindar, Tarer Putul Nautch, West Bengal

The traditional string puppet of West Bengal is known as *Tarer Putul Nautch.* The puppets are highly stylised and their costume and makeup are similar to "Jatra" the traditional theatrical form of West Bengal. They have round figures without legs and joints at shoulders, elbows and wrists. These puppets are about 2 to 3 feet high.

Four to five strings are attached to each of the figures and the puppeteer uses a wooden prop to manipulate the puppet.

In this picture, an episode from the life of the legendary Sufi saint of 18th century of Bengal "Lalan Fakir" is depicted. Mother of Lalan Fakir on the left is wearing a typical Bengali dress. She is in dialogue with Zamindar, who can also be seen in typical Bengali costume of that period.

24. Manipulation, Tarer Putul Nautch, West Bengal

In *Tarer Putul Nautch*, generally each puppeteer manipulates one puppet at a time but when complicated movements are to be shown, two or three persons are required to manipulate one figure.

In this picture, we see an episode from the life of the legendary Sufi saint of 18th century of Bengal "Lalan Fakir". We can also see the puppeteers manipulating the puppets.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

1. धागा पुतली, कठपुतली, राजस्थान

राजस्थान की धागा पुतलियां कठपुतली के नाम से जानी जाती है। पुतली का सिर तथा पगड़ी लकड़ी के एक ही टुकड़े से बनाई जाती है। इन पुतलियों के पैर नहीं होते हैं पर ये पुतलियां लहराती घाघरा पहनती हैं और इनका शरीर तथा हाथ कपड़े के टुकड़े को भर कर बनाए जाते हैं। अक्सर पुतली के चेहरे को पीले रंग से रंगा जाता है तथा चेहरे पर लंबी नाक और सुरूचिपूर्ण आंखें-भौहें बनाई जाती हैं। यहां एक राजस्थानी पुतली संचालक को कठपुतली बनाते हुए दिखाया गया है।

1. String Puppet, Kathputli, Rajasthan

The string puppets of Rajasthan are known as *Kathputli*. The head and the head-dress is carved out of a single piece of wood. These puppets have no legs but wear a flowing skirt and their body and hands are stuffed with rags. The face is usually painted yellow with a large nose and stylised eyes and eyebrows. Here a Rajasthani puppeteer is seen making a *Kathputli*.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

2. सपेरा, कठपुतली, राजस्थान

कठपुतली का एक लोकप्रिय कार्यक्रम अमर सिंह राठौर नामक पौराणिक वीर की कहानी पर आधारित है। ऐसा विश्वास है कि यह किस्सा मुगल बादशाह शाहजहां के समय में हुआ था। पुतली कार्यक्रम में अमर सिंह राठोर के जीवन की घटनाएं और दरबार मनोरंजन की शृंखला के कार्यक्रम जैसे– जादू का खेल, कलाबाजी नृत्य, सपेरे का खेल आदि प्रस्तुत किए जाते हैं, जिन्हें कथा रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

प्रस्तुत चित्र में आप बादशाह के दरबार में राजसी व्यक्तियों का मनोरंजन करते हुए पुतली सपेरे को देख सकते हैं।

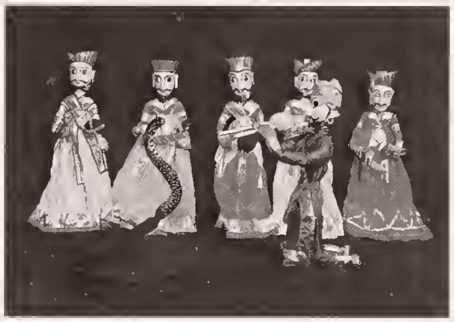

2. Snake Charmer, Kathputli, Rajasthan

One of the popular *Kathputli* shows is based on the story of a legendary hero named Amar Singh Rathore. He is believed to have lived during the rule of the Mughal Emperor Shahjahan. The puppet show presents incidents from his life and a series of court entertainment items such as magic shows, acrobatic dances, snake charmers, etc. are interwoven into the main story.

In this picture, you see the puppet snake charmer entertaining the nobles in the Emperor's court.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

3. अमर सिंह राठौर, अपने दरबारियों के साथ, कठपुतली, राजस्थान

प्रस्तुत चित्र में पौराणिक वीर अमर सिंह राठौर के जीवन के एक प्रसंग को प्रदर्शित किया गया है। आप बायीं ओर परंपरागत राजस्थानी पगड़ी पहने हुए अमर सिंह राठौर को देख सकते हैं। वे मुगल सेनापति शरावत खान से बात कर रहे हैं, जिन्हें उस समय की मुगल वेशभूषा में देखा जा सकता है। ध्यान से देखिए, सभी पुतलियों में से केवल वही एक है, जिन्हें दाढ़ी सहित दिखाया गया है। दरबार के अन्य राजसी व्यक्ति इन दोनों के मुकाबले को बहुत रूचि से देख रहे हैं।

3. Amar Singh Rathore with his courtiers, Kathputli, Rajasthan

In this picture, an episode from the life of the legendary hero Amar Singh Rathore is depicted. You see Amar Singh on the left wearing a typical Rajasthani head-dress. He is in dialogue with the Mughal General Sharawat Khan, who is seen in the Mughal costume of that period. Notice, he is the only one of the puppets who is shown with a beard. Other nobles in the court are watching the confrontation between the two with great interest.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

4. दरबार नर्तकी (नृत्यांगना), कठपुतली, राजस्थान

कठपुतली मनोरंजन साधनों के रंगपटल को प्रदर्शित करती है जिन्हें अभिनीत मुख्य कथा के साथ अलंकृत किया जाता है। राजस्थान की कठपुतली शैली की सर्वाधिक लोकप्रिय पुतली है– दरबार नर्तकी (नृत्यांगना)। अन्य पुतलियों को तीन धागों द्वारा परिचालित किया जाता है, जबकि इस पुतली को 5 से 9 धागों द्वारा परिचालित किया जाता है। पुतली चालक परिचालन में अपनी योग्यता के अनुसार विविध प्रकार की बहुत ही मनोहर नृत्य मुद्राओं को प्रदर्शित करने में सक्षम होता है।

4. Court dancer, Kathputli, Rajasthan

The *Kathputli* show has a repertoire of entertainment items which are interspersed with the main story that is being enacted. One of the most popular puppets of the *Kathputli* form of Rajasthan is the Court dancer. Unlike other puppets which are manipulated with three strings, this puppet is manipulated with 5 to 9 strings. The puppeteer is able to show a variety of very graceful dance movements according to his ability and dexterity in manipulation.

5. परिचालन, कठपुतली, राजस्थान

पुतलीकार मंच के पीछे खड़े हो कर अपने दोनों हाथों में पकड़े हुए छोटे अवलम्ब से जुड़े धागों की सहायता से पुतलियों को परिचालित करता है। कभी-कभी ये धागे पुतलीकार की उंगलियों से भी बांधे जाते हैं। अधिकतर पुतलियों को केवल तीन ही धागों की सहायता से परिचालित किया जाता है। इस संदर्भ में दरबार नर्तकी (नृत्यांगना) अपवाद है, कारण इसमें पुतलीकार 5 से 9 धागों का उपयोग करता है। पुतलीकार, कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय परंपरागत राजस्थानी वेशभूषा धारण करते है।

5. Manipulation, Kathputli, Rajasthan

The Puppeteer stands behind the stage and manipulates the puppets with strings attached to a small prop which he holds in both hands. Some times the strings are tied to the fingers of the puppeteer, most puppets are manipulated by just three strings, the court dancer being an exception, for which the puppeteer uses 5 to 9 strings. The puppeteer white presenting the show wears traditional Rajasthani costume.

6. कृष्ण, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

गोम्बेयेट्टा-कर्नाटक की परंपरा धागा पुतली है। ये पुतलियां बहुत ही सुरूचिपूर्ण होती हैं और इनकी वेशभूषा तथा मुख-सज्जा कर्नाटक की परंपरागत नाट्य कला शैली-यक्षगान के समान होती है। इन पुतलियों की पैरों सहित पूर्ण विकसित आकृतियां होती हैं तथा कंधे, कोहनियों और घुटनों पर जोड़ होते हैं।

प्रत्येक आकृति के साथ पांच या अधिक धागे जोड़े जाते हैं और पुतलीकार पुतली को परिचालित करने के लिए अवलंब का उपयोग करता है। गोम्बेयेट्टा में महाकाव्य ओर पुराणों के प्रसंगों को प्रस्तुत किया जाता है।

प्रस्तुत चित्र में, कृष्ण की पुतली आकृति को सुदर्शन चक्र पकड़े हुए अपनी परंपरागत वेशभूषा में देखा जा सकता है। यह पुतली स्वयं में ही कला का एक नमूना है।

6. Krishna, Gombeyatta, Karnataka

Gombeyatta is the traditional string puppet of Karnataka. The puppets are highly stylised and their costumes and make-up are similar to *Yakshagana*, the traditional theatrical form of Karnataka. They have rounded figures with legs and joints at the shoulders, elbows and the knees.

Five or more strings are attached to each of the figures and the puppeteer uses a prop to manipulate the puppet. In *Gombeyatta*; episodes from the epics and Puranas are presented.

In this picture, the puppet figure of Krishna in his traditional costume holding the Sudarshan Chakra is seen. The puppet figure itself is a work of art.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

7. अर्जुन, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

इस चित्र में प्रदर्शित पुतली महाभारत के पंच पांडवों में से एक भाई-अर्जुन की है। अर्जुन को उसके धनुष-बाण के साथ दिखाया गया है। चूंकि पुतली में बहुत से जोड़ होते हैं और पुतलीकार परिचालन के लिए कम से कम पांच धागों का प्रयोग अवश्य करता है, अतः पुतली कला शैली में विविध प्रकार की जटिल मुद्राएं भी प्रदर्शित की जा सकती है।

7. Arjuna, Gombeyatta, Karnataka

The puppet shown in this picture is that of Arjuna, one of the five Pandava brothers of the *Mahabharata*. Arjuna is characterised by his bow and arrow. Since the puppet has many joints and the puppeteer uses a minimum of five strings, for the manipulation, a variety of complicated movements can be depicted in this form of puppetry.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

8. कृष्ण तथा अर्जुन, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

इस चित्र में महाभारत की ही एक दूसरी कथा को दर्शाया गया है। भगवान विष्णु के अवतार, महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने कृष्ण भगवान युद्ध भूमि में मोहग्रस्त अर्जुन को उपदेश दे रहे हैं। उनके यही उपदेश भगवद् गीता में बद्ध है।

आप देख सकते है कि पुतली संचालक किस प्रकार की जटिल दक्षता से पुतलियों का संचालन कर रहा है। भगवान कृष्ण तथा अर्जुन की आकृतियों के अलावा रथ भी दर्शाया गया है जिसे मंच के कोने से धागे को खींच कर चलाया जाता है।

8. Krishna and Arjuna, Gombeyatta, Karnataka

In this picture, another episode from the *Mahabharata* is depicted. Krishna, the *avatara* of Vishnu, who is also acting as Arjuna's charioteer is giving him advice, *upadesha* on the battlefield of Kurukshetra. The compilation of these verses are in the *Bhagwad Gita*.

You can see the puppeteer using complicated skills to manipulate the puppets. Apart from the two figures Arjuna and Krishna, there is a chariot which is moved by pulling the strings from the wings of the stage.

9. भीम, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

इस चित्र में प्रस्तुत पुतली महाभारत के पांडव भाईयों में से द्वितीय भाई, भीम की है। उसे अपने बड़े आकार और गदा से पहचाना जा सकता है।

पुतली के साथ पांच या पांच से अधिक धागे जोड़े जाते हैं और पुतलीकार विविध प्रकार की गतियों (मुद्राओं) को प्रस्तुत करने के लिए परिचालन में अपनी कुशलताओं का उपयोग करते हैं।

9. Bhima, Gombeyatta, Karnataka

The puppet shown in this picture is that of Bhima, the second of the Pandava brothers of the *Mahabharata*. He can be identified by his large size and the mace he carries.

Five or more strings are attached to the puppet and the puppeteer uses his skills in manipulation to produce a wide range of movements.

10. रावण, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

इस चित्र में रामायण के एक मुख्य पात्र, दस मस्तकों वाले दानव रावण की पुतली दर्शाई गई है। जगत के रचियता ब्रह्मजी से प्राप्त आशीर्वाद के कारण रावण को दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं। भगवान राम के हाथों लंका के युद्ध में मारे जाने वाले रावण की कथा से हर भारतीय परिचित है।

10. Ravana, Gombeyatta, Karnataka

The puppet shown in this picture is of Ravana, the ten headed demon king. One of the main characters in the epic, *Ramayana*, Ravana possessed mystical powers due to a boon granted to him by Lord Brahma, the creator of the universe. The story of Ravana who was killed in the battlefield of Lanka by Lord Rama, is familiar to every Indian household.

11. रावण का दरबार, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

गोम्बेयेट्टा के पुतली नाटक वहां के पारंपरिक नृत्य नाटक यक्षगान का पूर्णत: अनुकरण करते हैं। इसी कारण वहां की पुतलियां तथा रंगमंच यक्षगान के पात्रों तथा मंच जैसे होते हैं।

प्रस्तुत चित्र में रामायण की एक घटना को दर्शाया गया है। बाली का पुत्र अंगद भगवान राम का दूत बन कर रावण के दरबार में आता है।

11. Ravana's court, Gombeyatta, Karnataka

Gombeyatta puppet theatre closely follows *Yakshagana*, the traditional live theatre form of Karnataka. The puppets of Gombeyatta resemble the actors of *Yakshagana* and the sets are also designed like the *Yakshagana* stage.

In this picture, an episode from the epic, *Ramayana* is depicted Angad, the son of Bali has come to Ravana's court, as a representative of Rama.

12. संचालन, गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक

गोम्बेयेट्टा की पुतलियों में हर पुतली से पांच या उससे अधिक धागे जुड़े रहते हैं। फिर इन धागों को छड़ जैसी लकड़ी के साथ बांधा जाता है। इसी लकड़ी की सहायता से पुतली संचालक पुतलियों का संचालन करता है। आमतौर पर एक संचालक केवल एक ही पुतली का संचालन करता है, पर जब किसी जटिल क्रिया-कलाप को साकार करना होता है तो दो-तीन संचालक भी एक पुतली का संचालन करते हैं। किसी भी पुतली नाटक में एक बार में चार से पांच पुतलियों का संचालन किया जाता है।

इस चित्र में आप महाभारत के उस कथांश को देख रहे हैं जिसमें भीम द्रोपदी के सम्मान की रक्षा के लिए शपथ ले रहा है। इसी चित्र में आप मंच के पीछे से पुतलियों का संचालन करते संचालकों को भी देख सकते हैं।

12. Manipulation, Gombeyatta, Karnataka

Gombeyatta puppets have five or more strings attached to each figure. These strings are in turn tied to a rod-like wooden props. The puppeteer manipulates the puppets with the help of these props. Generally one puppeteer manipulates one puppet, but when some complicated movements are to be shown, two or three puppeteers may co-operate to manipulate one figure in a show, there may be four to five puppets being manipulated at the same time.

In this picture, we see an episode from the *Mahabharata* where Bhima is taking an oath to avenge the honour of Draupadi. You can also see the puppeteers manipulating puppets from behind the stage.

13. नर्तक, बोम्मालट्टम, तमिलनाडु

बोम्मालट्टम, तमिलनाडु का पारंपरिक पुतली-नाटक है। इसकी पुतलियां सारे भारत की धागा पुतलियों में सब से वजनी और बड़े आकार की होती है। एक पुतली लगभग साढ़े चार फीट ऊंची तथा 10 किलो वजन की होती है। वे लकड़ी की पूरी विकसित तथा मानवीय शरीर के संधि-स्थलों जैसी जोड़ युक्त होती है। पुतलियों के परिधान यहां के पारंपरिक नाटक के परिधान जैसे होते हैं।

प्रस्तुत चित्र में दृष्टिगोचर पुतली स्त्री नर्तक की है।

13. Dancer, Bommalattam, Tamil Nadu

Bommalattam is the traditional puppet theatre from Tamil Nadu. These puppets are the largest and the heaviest of all traditional Indian string puppets. A puppet may be as long as 4.5 ft. in height and weigh about 10 kgs. They are made of wood and have full rounded figures with joints usually at shoulders, elbows, hips, knees, ankles and sometimes even at the wrists. The costume of the puppets are like the traditional human theatre of this region.

The puppet shown in this picture is of a female dancer.

14. संचालन, बोम्मालट्टम, तमिलनाडु

बोम्मालट्टम की पुतली संचालन कला धागे तथा छड़ का सम्मिलित रूप है। धागा-पुतलियों की भांति उनका संचालन ऊपर की तरफ से किया जाता है पर साथ ही हाथों से दो छड़ें भी जुड़ी रहती है। पुतली से जुड़े धागे लोहे के एक घेरे से बंधे होते है जो संचालक के सिर पर ताज की भांति रखा जाता है तथा छड़ें उसके हाथों में होती हैं। जब पुतली के संधियुक्त घुटनों का संचालन करना होता है तब एक दूसरा संचालक मुख्य संचालक की सहायता करता है।

14. Manipulation, Bommalattam, Tamil Nadu

The manipulation technique of *Bommalattam* combines elements of both strings and rods. Like other string puppets they are suspended and manipulated from above, but two rods are also attached to the hands. The strings from the puppet are tied to an iron ring fitted on the head of the puppeteer like a crown, and the rods are held in his hands. When the puppet is required to move its jointed limbs other than the hands, another puppeteer joins the main puppeteer to manipulate the puppet.

15. द्रौपदी, बोम्मालट्टा, आंध्र प्रदेश

बोम्मलट्टा का शाब्दिक अर्थ है गुड़ियों का नृत्य। आंध्र प्रदेश की पुतलियां भी काफी बड़ी, वजनी तथा पूर्ण विकसित तो होती ही है साथ ही मानव अंगों की भांति संधियुक्त भी। ये अत्यंत शैलीगत होती हैं। प्रस्तुत चित्र में पांचाल के राजा ध्रुपद की पुत्री तथा पांडवों की पत्नी द्रोपदी को दर्शाया गया है।

15. Draupadi, Bommalatta, Andhra Pradesh

Bommalatta, literally means, the dance of dolls. The string puppets of Andhra Pradesh are quite large and heavy and have full rounded figures with joints usually at shoulders, elbows, hips, knees, ankles and even wrists. The *Bommalatta* puppets are highly stylised. This picture shows, Draupadi, the daughter of king Draupada of Panchala and the wife of the Pandavas of *Mahabharata*.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

16. कृष्ण, सखी-कुनढेई, ओड़िशा

सखी कुनढेई ओड़िशा की पारंपरिक पुतली कला है। ये पुतलियां हल्की लकड़ी से बनाई जाती है तथा इनके पैर नहीं होते। राजस्थान की कठपुतलियों की भांति इनका भी लहराता घाघरा होता है। इनके हाथ संधियुक्त होते हैं। किंतु मुख्य पात्रों का प्रतिनिधित्व करने वाली पुतलियों की गर्दन, कंधों और कोहनियों पर भी जोड़ होते हैं। यहां के पारंपरिक रंगमंच जालन से मिलते-जुलते पुतलियों के भी परिधान होते है।

प्रस्तुत चित्र भगवान कृष्ण का है। यहां के ज्यादातर पुतली नाटक भगवान कृष्ण की कथा पर आधारित होते है।

16. Krishna, Sakhi-Kundhei, Odisha

Sakhi-Kundhei is the traditional puppet of Odisha. These string puppets are made of light wood and have no legs. Like *Kathputlis* of Rajasthan, they have flowing skirts. The puppets are made of wood and have joints on their hands. Puppets representing major characters also have joints at their neck, shoulders and elbows. Five to seven strings are attached to a puppet figure. The costume is more or less similar to the Jatra folk theatre of this region.

The puppet shown in the picture is of Lord Krishna. Most of the puppet plays are based on legends of Krishna.

17. राधा, सखी-कुनढेई, ओड़िशा

इस चित्र में दर्शाई गई पुतली ओड़िशा की पारंपरिक धागा पुतली सखी कुनढेई की है। उड़ीया में सखी का मतलब है सहेली तथा ये पुतलियां खूबसूरत गुड़िया होती है। इन्हें सखी कुनढेई कहा जाता है।

इन पुतलियों के पैर नहीं होते तथा इनका लंबा लहराता घाघरा होता है। धागा पुतलियों की तुलना में इनमें ज्यादा जोड़ होते हैं इस कारण इनमें चंचलता अधिक होती है तथा संचालन में आसानी। इस चित्र की स्त्री आकृति भगवान कृष्ण की बचपन की मित्र राधा की है।

17. Radha, Sakhi-Kundhei, Odisha

The puppet depicted in this picture belongs to the string puppet tradition of Odisha known as *Sakhi-Kundhei*. *Sakhi* in Odisha means a female companion and since most of these puppets are beautiful dolls, they came to be known as *Sakhi Kundhei*.

These puppets have no legs and have long flowing skirts. The puppets have more joints when compared to string puppets and are, therefore, more versatile, articulate and easy to manipulate. The female figure depicted in this picture is of Radha, Lord Krishna's childhood companion.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

18. राम और लक्ष्मण, पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल के परम्परागत छड़ पुतली को पुतुल नाच कहते है। छड़ पुतलियां आकार में बड़ी होती हैं और मंच के नीचे से छड़ियों के सहारे संचालित होती हैं। ये पुतलियां एक निर्दिष्ट क्षेत्र में कलात्मक ढंग का अनुसरण करती है और लकड़ी से तराशकर बनाई जाती है। इस चित्र में पश्चिम बंगाल के पुतुल नाच से राम और लक्ष्मण को "सीता हरण" के एक दृश्य में दिखाया गया है। राम का रंग और वेशभूषा ध्यान देने योग्य है, इसका लोक नाटक के ढंग में अनुसरण है।

18. Rama and Lakshmana, Putul Nautch, West Bengal

The traditional rod puppet form of West Bengal is known as *Putul Nautch*. Rod puppets, usually big in size, are supported and operated by rods from below the stage. They are carved from wood and follow the various artistic styles of a particular region. Rama and Lakshmana from the episode *Sita Haran* in the *Putul Nautch* of West Bengal is seen in the picture. Notice the colour of Rama's face and the costumes which are styled in conformity with the local theatre styles.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

19. रावण, पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

प्रस्तुत चित्र में दृष्टिगोचर पुतली पश्चिम बंगाल के छड़ पुतली नाटक की है। लकड़ी को काट कर बनाई गई इन पुतलियों के पैर नहीं होते। ये तीन फीट ऊंची तथा 8-10 किलो वजन की होती है। यहां दस मस्तक वाले दानव-रावण को दर्शाया गया है। पृष्ठभूमि का भित्तिचित्र रावण के राजमहल के अशोकवन का है।

19. Ravana, Putul Nautch, West Bengal

The puppet shown in this picture belongs to the Rod puppet theatre of West Bengal. Most of these puppets carved out of wood, have no feet or legs. These puppets are about 3 feet high and weigh around 8 to 10 kgs. Here, the demon king Ravana is portrayed with his ten heads. The painting shown in the background is of '*Ashokavan*', Ravana's famous palace garden.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

20. नर्तक, पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न पुतली नाटक का प्रदर्शन अलग-अलग होता है। द्वितीयत: क्रियात्मक कलाओं की भांति ही पुतली नाटक का प्रदर्शन सुन्दर और वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है। इस चित्र में, पश्चिम बंगाल के पुतुल नाच में परिचायक पुतुल सखी (नर्तक) को दिखाया गया है। आराधना के नृत्य के लिए इस पुतली का उपयोग होता है।

20. Dancer, Putul Nautch, West Bengal

The performance of the puppet theatre also vary according to the region and kind of puppets used. As in other performing arts, there is a stylised way of presentation. In this picture, *Sakhi* (dancer), the introductory puppet used in Putul Nautch of West Bengal is seen. This puppet may be used for dance as part of the invocation.

21. संचालन, पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

छड़ पुतली दस्ताना पुतली का ही विस्तारित रूप है। छड़ पुतली संचालक कमर पर एक बांस की नाभिटोपी बाँधता है जिस पर वह पुतली की छड़ का सहारा देता है। पुतली संचालक कपड़े या दृश्याबन्ध से अपने आप को ढक लेता है। पुतली के शरीर और सिर का संचालन पुतली की भीतरी छड़ से किया जाता है। साधारणतः इन पुतलियों के पैर और पंजे नहीं होते हैं। पुतली के हाथ का नियंत्रण पतले तारों से किया जाता है और संचालक की हर एक गतिविधि पुतली पर झलकती है। इस प्रकार के संचालन के कारण ही ये पुतलियां सजीव दिखाती हैं। इस चित्र में पश्चिम बंगाल के छड़ पुतली का संचालन दिखाया गया है। चित्रित चरित्र रामायण के लक्ष्मण का है।

21. Manipulation, Putul Nautch, West Bengal

Rod Puppets are an extended form of glove puppets. A rod puppeteer ties a bamboo hub around his waist on which he places the supporting rod of the puppet. The puppeteer conceals himself behind a painted cloth. The rod inside the figure is used to control the body and the head movement. These puppets generally have no legs or feet. The hands of the puppet are controlled by thin wires and every movement of the puppeteer is reflected in the puppet. Because of this style of manipulation, the puppets appear almost realistic. Seen here is the manipulation of the rod puppet of West Bengal. The character is that of Lakshmana from the *Ramayana*.

22. घुड़सवार, यमपुरी, बिहार

बिहार की पारंपरिक छड़-पुतली कला यमपुरी कहलाती है। ये लकड़ी की बनी होती है तथा पश्चिम बंगाल और ओड़िशा की छड़-पुतलियों के विपरीत इकहरी बिना किसी जोड़ की होती है। संधि-स्थल न होने के कारण इनके संचालन का तरीका अन्य छड़ पुतलियों से भिन्न होता है तथा उसके लिए ज्यादा दक्षता की आवश्यकता पड़ती है। यह चित्र एक अश्वरोही का है।

22. Man riding a horse, Yampuri, Bihar

The traditional rod puppet of Bihar is known as *Yampuri*. These puppets are made of wood. Unlike the traditional rod puppets of West Bengal and Odisha, these puppets are in one piece and have no joints. As these puppets have no joints the manipulation is different from other rod puppets and requires greater dexterity. The picture shown here is of a man riding a horse.

पुतली कला
The Art of Puppetry
2

23. माँ और जमींदार, तारेर पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल की परंपरागत धागा पुतली तारेर पुतुल नाच के नाम से जानी जाती है। ये पुतलियाँ अत्यंत सुरुचिपूर्ण बनी होती हैं और इनकी वेशभूषा तथा रूप-सज्जा पश्चिम बंगाल की परंपरागत नाट्यकला शैली "जात्रा" से मिलती-जुलती होती है। इनकी गोल आकृति, बिना पैरों की होती है और इनके कंधों, कोहनियों तथा कलाइयों पर जोड़ होते हैं। ये पुतलियां 2 से 3 फुट तक ऊँची होती है।

प्रत्येक पुतली के साथ चार से पाँच धागे जुड़े होते हैं और पुतली संचालक पुतली को चलाने के लिए एक लकड़ी के टेक का उपयोग करता है।

प्रस्तुत चित्र में, बंगाल के 18वीं शताब्दी के पौराणिक (कल्पित) सूफी संत "लालन फकीर" के जीवन का एक प्रसंग प्रदर्शित है। बायीं ओर लालन फकीर की माँ बंगाल की विशेषतासूचक वेशभूषा पहने हुए है। वे जमींदार के साथ बात कर रही हैं, जिन्हें उस समय की विशिष्ट बंगाली वेशभूषा पहने देखा जा सकता है।

23. Mother and Zamindar, Tarer Putul Nautch, West Bengal

The traditional string puppet of West Bengal is known as *Tarer Putul Nautch*. The puppets are highly stylised and their costume and makeup are similar to "Jatra" the traditional theatrical form of West Bengal. They have round figures without legs and joints at shoulders, elbows and wrists. These puppets are about 2 to 3 feet high.

Four to five strings are attached to each of the figures and the puppeteer uses a wooden prop to manipulate the puppet.

In this picture, an episode from the life of the legendary Sufi saint of 18th century of Bengal "Lalan Fakir" is depicted. Mother of Lalan Fakir on the left is wearing a typical Bengali dress. She is in dialogue with Zamindar, who can also be seen in typical Bengali costume of that period.

24. संचालन, तारेर पुतुल नाच, पश्चिम बंगाल

'तारेर पुतुल नाच' में, आमतौर पर प्रत्येक पुतली संचालक एक बार में एक पुतली को परिचालित करता है, पर जब जटिल क्रियाओं अथवा (सं)चलनों को दिखाना हो, तब एक ही पुतली का संचालन करने के लिए दो अथवा तीन व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत चित्र में, 18वीं शताब्दी के बंगाल के पौराणिक (कल्पित) सूफी संत 'लालन फकीर' के जीवन का एक प्रसंग प्रस्तुत है। इसमें हम पुतलियां चलाते हुए पुतली संचालकों को भी देख सकते हैं।

24. Manipulation, Tarer Putul Nautch, West Bengal

In *Tarer Putul Nautch*, generally each puppeteer manipulates one puppet at a time but when complicated movements are to be shown, two or three persons are required to manipulate one figure.

In this picture, we see an episode from the life of the legendary Sufi saint of 18th century of Bengal “Lalan Fakir”. We can also see the puppeteers manipulating the puppets.

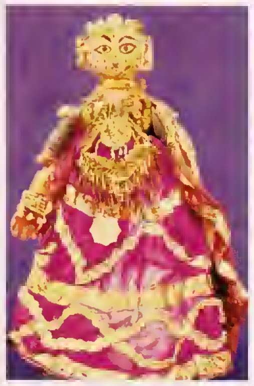

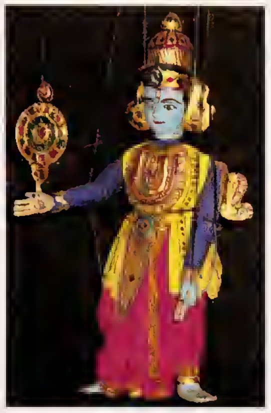

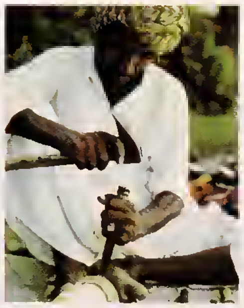

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training
Published by Director, Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi
Printed at Aravali Printers & Publishers Pvt. Ltd., New Delhi - 110 020
2015